

1. भाषा

हिन्दी(वर्ग-XI - XII)

1. प्रस्तावना:

भाषा के बिना यह जीवन-जगत् एक अर्थ में अधकारमय है। इसे हम देखकर भी जान-समझ नहीं पाते, अनुभव नहीं कर पाते। भाषा एक महती शक्ति और प्रकाश है। वह साधन और माध्यम है जिसके द्वारा हम जीवन-जगत् को जान-समझ पाते हैं, अनुभव कर पाते हैं; तथा प्राप्त अनुभव और ज्ञान को व्यक्त कर पाते हैं। भाषा के द्वारा ही हम विचार करते हैं और अपने विचारों और अनुभवों को प्रकट कर पाते हैं। इसके सहारे ही हम अपने अनुभव, विचार, संवेदन, इच्छाएँ और मनोभाव दूसरों तक सम्प्रेषित कर पाते हैं। यह सम्प्रेषण का एकमात्र विश्वसनीय आधारभूत माध्यम है। भाषा-क्षमता अर्जित करते हुए ही हम मानसिक-बौद्धिक विकास को प्राप्त करते हैं जो अन्य प्रकार की प्रगति और विकास का मूल है। इस रूप में भाषा की शिक्षा अन्य तमाम विषयों की शिक्षा का आधार और सहयोगी है। स्वभावतः शिक्षण की लम्बी प्रक्रिया में भाषा-शिक्षण और भाषा-परिष्कार का कार्य निरंतरता की अपेक्षा रखता है।

भारतीय संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिन्दी व्यापक जन की भाषा है। एक हजार वर्षों से भी अधिक समय से विकसित होती आयी हिन्दी भाषा और उसका वैविध्यपूर्ण व्यापक एवं विस्तृत साहित्य विविध भाषा-भाषियों, अनेक जातियों, धर्मों-सम्प्रदायों, लोक संस्कृतियों और विचारधाराओं द्वारा सेवित-संवहित होता आया है। इसमें हजार वर्षों से व्यापक भारतीय जनता की आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद, संकल्प-विकल्प और स्वप्न-यथार्थ की अबाध अभिव्यक्ति होती आयी है। हिन्दी भाषा-साहित्य के सुदीर्घ इतिहास में अनेकानेक प्रवृत्तियाँ और परम्पराएँ बनीं और विलीन हुईं। वे कभी दिखीं तो कभी अंतर्धान होकर आगे पुनः परिवर्तित रूपों में प्रकट हुईं। हिन्दी भाषा और साहित्य को पुराने युगों में कभी राजसत्ता और धर्म जैसी प्रभावशाली शक्ति का संरक्षण मिला हो अथवा नहीं; लोक संरक्षण इसे सदैव प्राप्त रहा। इसी लोकसंरक्षण के बल पर वह अपनी शक्ति, प्रभाव, क्षमता और विस्तार को आगे बढ़ाते हुए स्वाधीनता संघर्ष का, अहिन्दी भाषियों द्वारा भी सहर्ष स्वीकृत, प्रमुख माध्यम बनी। इसकी क्षमताओं और लोकप्रियता को ही दृष्टिपथ में रखकर संविधान निर्माताओं ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित किया। आज यह भाषा राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक परिदृश्य में भारत राष्ट्र के महान् गौरव के अनुरूप अपनी पहचान और प्रतिष्ठा अर्जित कर रही है। यह सरकारी-गैरसरकारी गतिविधियों, सरोकारों और व्यवहारों में बहुविध रूपों और छवियों में अपनाई जाकर अपनी प्रगति और विकास के नये आयामों को तय करती दिखाई पड़ रही है। यह आधुनिक जीवन और वैश्विक व्यवहारों-सरोकारों में उद्योग-धंधे, व्यापार-वाणिज्य, राजनीति-अर्थनीति, युद्ध और शांति, ज्ञान-विज्ञान-प्रौद्योगिकी, दण्ड-न्याय, शिक्षा-संस्कृति-कला-शिल्प-साहित्य-धर्म आदि तमाम धरातलों पर कुशलतापूर्वक वर्धमान और विकसनशील है। इन व्यापक व्यवहारों और बहुव्याप्तियों के अनुरूप हिन्दी भाषा में आज नई-नई प्रयुक्तियाँ प्रकट हो रही हैं, नये-नये पारिभाषिक शब्द निर्मित हो रहे हैं और तदनु रूप व्याकरण में भी नये परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं।

हिन्दी प्रदेश-विशेष की भाषा नहीं है। उसके नाम और स्वरूप में ही राष्ट्रीय व्याप्ति की आकांक्षा और शक्ति अंतर्निहित है। यह बात न्यूनाधिक रूप में उसके ऐतिहासिक विकास से भी प्रमाणित होती है। हिन्दी की अनेक उपभाषाएँ, विभाषाएँ या बोलियाँ हैं जिनमें से कई तो साहित्यिक भाषा के रूप में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा पहले ही अर्जित कर चुकी हैं। ये बोलियाँ व्यापक हिन्दी क्षेत्र के अनेक प्रदेशों में फैली हुई हैं। बिहार भी मूलतः एक ऐसा हिन्दी भाषा प्रदेश है जिसमें अनेक बोलियाँ बोली जाती हैं। इनमें मैथिली का तो पुराना साहित्यिक इतिहास भी है। मैथिली के साथ ही भोजपुरी, मगही, अंगिका आदि में अपना स्वतंत्र साहित्य भी है और वह लगातार लिखा जा रहा है। इनके अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और बंगला भाषाएँ भी अपना सम्मानित स्थान रखती हैं। इस तरह बिहार के बहुभाषिक परिवेश में हिन्दी एक ओर मातृभाषा के रूप में और दूसरी ओर व्यापक राष्ट्रभाषा और शिक्षण-साहित्य की भाषा के रूप में भी उपस्थित और समादृत है।

बिहार में हिन्दी-शिक्षण की अनेक समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं जो विशेष रूप से यहाँ की विभाषाओं या बोलियों की ओर से आती हैं। प्रायः बच्चे इन बोलियों के परिवेश में ही जन्म लेते हैं और उनका आरंभिक पालन-पोषण होता है। वे इन्हें ही मातृभाषा के रूप में प्रायः प्राप्त करते हैं। स्वभावतः उनके हाव-भाव, उच्चारण और अभिव्यक्तियों पर इनका गहरा रंग-प्रभाव होता है। प्रारंभिक वर्गों में हिन्दी शिक्षण का यह तकाजा है कि बच्चों की हिन्दी उत्तरोत्तर उच्चारण, वर्तनी, वाक्य-रचना और अभिव्यक्ति में मानकीकरण की ओर उन्मुख होती जाये और शीघ्र ही बोलियों के संकीर्ण और स्थानीय प्रभावों से मुक्त हो जाये।

2. ज्ञान विस्तार:

स्वभावतः विद्यालयीय शिक्षण में हिन्दी भाषा-साहित्य के शिक्षण के लिए विशेष सजगता, सावधानी और गंभीरता की आवश्यकता है। विद्यालयीय शिक्षा पूरी होने तक छात्र का भाषा और साहित्य विषयक बोध इतना विकसित हो जाना चाहिए कि उसमें गद्य-पद्य की किसी रचना के संबंध में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास उत्पन्न हो सके। वह निर्धारित पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त भी किसी रचना को पढ़कर उसके बारे में अपनी भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया दे सके। वह विविध विषय-क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा तथा भिन्न संदर्भ और जरूरतों के अनुसार अलग-अलग शैली रूपों से परिचित हो सके। छात्र को हिन्दी भाषा की विशेषता, सूक्ष्मता और सौंदर्य की पहचान और परख हो सके। भाषा के माध्यम से छात्र अपने यथार्थ जगत् को समझ सके और कल्पना के संसार की रचना कर सके। भाषा के द्वारा उसके ज्ञान क्षेत्र का इतना विस्तार हो कि वह अखबारों में आनेवाले व्यक्ति, परिवेश, समाज, संस्कृति आदि की जानकारी रख सके और इस जानकारी में कहीं क्या बढ़ोतरी वांछित है, इसकी पहचान कर सके।

3. कौशल विस्तार:

स्कूली शिक्षा के दौरान हिन्दी भाषा में अपनी ऐसी दक्षता और पकड़ छात्र बना सके कि वह पाठक, श्रोता, वक्ता, लेखक और विश्लेषक के रूप में आत्मविश्वास अनुभव कर सके। आवश्यकता पड़ने पर वह अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकों आदि से सामग्री एकत्र कर उसका

सटीक उपयोग कर सके। भाषा में दक्षता और कौशल के बल पर वह श्रव्य-दृश्य संचार-माध्यमों पर प्रसारित परिचर्चाओं-वार्ताओं-भाषणों आदि को सहजता से सुनकर समझ सके। छात्र अपनी अर्जित भाषिक दक्षता और कौशल के बल पर वाद-विवाद, चर्चाओं, भाषणों आदि में समर्थ प्रतिभागीता का प्रमाण दे सके तथा व्यवस्थित तथा असरदार तरीके से अपने विचारों-भावों और संवेदनों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त कर सके। भाषा उसमें जरूरी मानसिक बौद्धिक गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व को सम्पन्न बनाये।

4. रुचि और रुझान :

भाषा का शिक्षण ऐसा होना चाहिए कि छात्र में बिहार की बोलियों और अन्य भाषाओं की विविधता के प्रति स्वीकृति और सद्भाव-सम्मान का भाव बने तथा हिन्दी के सहारे अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा का भाव भी विकसित हो। हिन्दी भाषा और साहित्य के शिक्षण द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को जान-समझकर उनकी अच्छाइयों को आत्मसात कर सकने की मनोवृत्ति जन्म ले। जातिवाद, वर्गवाद, ऊँच-नीच के संकीर्ण मनोभाव, धर्म-सम्प्रदाय को लेकर मन में गँठ बना लेने वाली कट्टरता, लिंग-भेद आदि विगलित हों और मन में सहिष्णुता, सद्भाव, उदारता और सहज अपनापन के भाव जन्में और बद्धमूल हों, तभी हिन्दी भाषा और साहित्य का शिक्षण सार्थकता प्राप्त कर सकता है।

5. पाठ्यपुस्तक :

विद्यालयीय छात्रों में उपर्युक्त योग्यता, दक्षता और सामर्थ्य विकसित करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकों, विशेषतः हिन्दी भाषा-साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में ऊपर चर्चित विशेषताओं का सन्निवेश हो। यह सच है कि पाठ्यपुस्तकें ही भाषा-साहित्य के शिक्षण का एकमात्र स्रोत नहीं होतीं, किन्तु वे प्राथमिक रूप से अधिकृत रूप में एक मार्ग, एक दिशा देती हैं और संबद्ध विषय में छात्रों के मानसिक-बौद्धिक अभिनिवेश में तत्काल सहायक होती हैं। इसलिए उनमें संकलित रचनाएँ और अभ्यास योग्य एवं उत्तरदायी व्यक्तियों द्वारा अत्यंत सावधानी और गंभीरता से तैयार किए जायें ताकि छात्रों में वांछित ज्ञान, समझ, दृष्टिकोण, अभिरुचि, संस्कार और कौशल को बनाने-सँवारने और बढ़ाने में प्रधानतापूर्वक सहायक हों। पाठ्यपुस्तकों साधन और माध्यम के रूप में छात्रों में कक्षा-दर-कक्षा भाषा-सामर्थ्य को पैनी, दृढ़तर और बहुमुखी बनाती चले तथा उनमें साहित्य की प्रकृति, स्वरूप, प्रयोजन और उद्देश्य की समाज-संबद्ध, जिम्मेदार व संवादी चेतना अधिकाधिक गहरी होती चले।

इन पुस्तकों में कौतूहलपरक, जिज्ञासावर्धक तथा जीवन-जगत् के अनेकानेक सरोकारोंवाली विविधतापूर्ण रचनाएँ शामिल हों और उनसे जुड़े हुए ऐसे अभ्यास हों कि छात्र उन्हें तनावमुक्त सहजता से आत्मसात् करते हुए उनपर भावात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सकें। रचनाओं के चयन, क्रमव्यवस्था, विषय-वस्तु और स्वरूप में यह ध्यान रखा जाय कि छात्र रचना पढ़ते समय अन्य विषयों की अवधारणाओं से उसे जोड़ पाएँ और दोनों के अंतर्संबंध देख सकें।

पाठ्यपुस्तकों में विषय-वस्तु को फलक इतने विस्तृत होने चाहिए कि आधुनिक समाज के विविध सरोकारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हो, जैसे- पर्यावरण, परिवेश, सवैधानिक दायित्व, लोकसंस्कृति, व्यापार-वाणिज्य और विविध व्यवसाय, बाजार, सिनेमा, खेल-जगत्, नाटक, नृत्य, संगीत, उद्योग-धंधे, कृषि, मीडिया, विज्ञान जगत्, पर्वत-समुद्र-अंतरिक्ष, राजनीति, धर्म आदि। इन विषय-वस्तुओं के द्वारा भाषा के विविध प्रयोगों, संदर्भों, उनकी शब्दावलियों और अवधारणाओं से छात्रों का परिचय हो और जीवन-जगत् के विविध रूपों को वे आत्मसात् कर सकें।

पाठ्यपुस्तकों द्वारा मानसिक वातावरण निर्मित होता है और उससे संबद्ध अभ्यास प्रश्नों द्वारा छात्र विषय-वस्तु को परखने, उनसे गहराई के साथ जुड़ने के साथ उनके विश्लेषण का कौशल विकसित करते हैं। अभ्यास प्रश्नों द्वारा रचना के बिन्दुवार परख-विश्लेषण, अवबोध तथा विषय के विविध पहलुओं को देखने और आँक सकने की अंतर्दृष्टि भी विकसित होती है।

6. व्याकरण और रचना :

यह तथ्य सर्वस्वीकृत है कि भाषा एक अनुशासन है और बच्चों में मातृभाषा के जरिए व्याकरण और रचना की एक आधारभूत, अन्तःस्फूर्त और सहज समझ संस्कारतः चली आती है। जरूरत सिर्फ उसे सचेत रूप से स्पष्ट करने, दिशा और विस्तार देने तथा समुचित अभ्यास द्वारा उसके प्रति जागरूक बनाने की होती है। भाषा मातृभाषा के धरातल से उठकर सतत् परिमार्जित होती हुई सीखने-जानने की पूरी अवस्था तक विकसित होती चलती है। परिमार्जन और विकास की इस प्रक्रिया में व्यावहारिक रूप से व्याकरण की समझ भी बनती चलती है। इस सच्चाई को ध्यान में रखते हुए विद्यालय स्तर के उच्चतर वर्गों के छात्रों के लिए एक स्वतंत्र व्याकरण पुस्तक तैयार की जानी चाहिए जिसमें व्याकरण और रचना के नियमों की बोज़िल, सैद्धांतिक आकृतियाँ न हों, बल्कि पाठ्यपुस्तकों में शामिल पाठों और दैनंदिन जीवन के भाषायी व्यवहारों एवं पत्र-पत्रिकाओं के दैनिक पाठों के धरातल पर निर्भर अनुप्रयुक्त व्याकरणिक समझ को उपयोगी तरीके से बोध में लाने की कोशिश की गई हो। इससे कई लाभ होंगे। एक तो, पाठ्यपुस्तकों में शामिल रचनाओं के चयन और निर्माण में व्याकरण और रचना की व्यावहारिक समझ जगा सकने के लिए अपेक्षित जागरूकता बरती जा सकेगी तथा छात्र मुख्य पाठ्यपुस्तक की रचनाओं के द्वारा ही रचना और व्याकरण संबंधी नियमों और प्रयोगों के द्वारा ही रचना और व्याकरण संबंधी नियमों और प्रयोगों को सहज ही सीख सकेंगे। इसके लिए अलग से प्रयत्न नहीं करना होगा। दूसरे, यह कि दैनंदिन जीवन के भाषायी व्यवहारों, वार्ताओं एवं पत्र-पत्रिकाओं और संचार माध्यमों में प्रयुक्त भाषा के प्रति छात्र सचेत और जागरूक हो सकेंगे। यह आम शिकायत रही है कि हमारे छात्र पठन-पाठन की दुनिया से बाहर के भाषायी व्यवहारों में लापरवाह होते हैं, जानते हुए भी वे धड़ल्ले से गलतियाँ दुहराते रहते हैं। भाषा की दृष्टि से ये शिकायतें कुछ दूर हो सकेंगी और छात्र पाठ्य-पुस्तकों के बाहर की दुनिया से भी भाषायी अनुशासन का संस्कार अर्जित कर सकेंगे। व्याकरण और रचना का ज्ञान, यह सही है कि अंततः अभ्यास साध्य होता है, किन्तु इसका प्रयत्न तो किया ही जा सकता है कि व्याकरण और रचना का ज्ञान और अभ्यास तनावपूर्ण, अरुचिकर और उबाऊ न हो। व्याकरण सहज साध्य बन सके, भाषा की रचनात्मक बनावट और तंतुओं की सहज और सुगम सिद्धि हो सके, इसके लिए छात्रों को आपस में तथा स्कूल के बाहर के लोगों के साथ वार्तालाप में भी सीखे हुए अथवा अर्जित व्याकरण ज्ञान के सहज अनुशासन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। स्वतंत्र रूप

से तैयार की जानेवाली व्याकरण और रचना की पुस्तक में इन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। इस पुस्तक को तैयार करने के क्रम में हिन्दी भाषा के उद्गम और ऐतिहासिक विकास क्रम को उसके विविध चरणों के साथ व्यावहारिक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट दर्शाते हुए एक संक्षिप्त आलेख भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि छात्र यह समझ सकें कि आज की उनकी हिन्दी हजार वर्षों के लम्बे ऐतिहासिक विकास क्रम में किन-किन स्तरों पर परिवर्तित होती हुई यहाँ तक पहुँची है। इस आलेख में उसके भावी विकास के कुछ संकेत भी स्पष्ट होने चाहिए।

7. पूरक पाठ्यपुस्तक:

हजार से भी ज्यादा वर्षों में फैले हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक संक्षिप्त, सारगर्भित एवं प्रामाणिक समझ विद्यालय के उच्चतर वर्ग के छात्रों को देने के लिए पूरक पाठ्यपुस्तक के रूप में एक स्वतंत्र पुस्तक होनी चाहिए जिसमें हिन्दी भाषा के विकास के विविध चरणों और विशेषताओं के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों की आधारभूत जानकारी दी गई हो। इस पुस्तक में विभिन्न युगों की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियों और सामान्य विशेषताओं के साथ-साथ प्रमुख रचनाकारों का संक्षिप्त और प्रामाणिक परिचय दिया जाना चाहिए। इस पुस्तक के निर्माण और लेखन में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास की एक ठोस आधारभूत जानकारी छात्रों को हो सके, ऐसी जानकारी जिसके आलोक में वे भाषा और साहित्य के समकालीन परिदृश्य को समझ सकें। हजार वर्षों के इस लम्बे इतिहास में अनेक भाषा, साहित्य और संस्कृति संबंधी आंदोलनों की प्रेरणाएँ और प्रभाव विभिन्न युगों में काम करते रहे हैं। देशी-विदेशी प्रेरणाएँ और प्रभाव भी जब-तब हमारी भाषा और साहित्य में सक्रिय रहे हैं। इन सबके बारे में एक प्रामाणिक जानकारी इस देश के हर शिक्षित नागरिक के लिए अनिवार्य है। आगे के उच्चतर शिक्षण में छात्र के अध्ययन-शिक्षण की चाहे जो भी दिशा हो भाषा-साहित्य की एक मूलभूत प्रामाणिक अनभिज्ञता तो अपेक्षित है ही। यह पुस्तक इसी जरूरत की पूर्ति के लिए सहज और सुगम भाषा में तैयार की जानी चाहिए।

8. सहायक पाठ:

भाषा और साहित्य की हमारी आज की समझ समाज, राजनीति, व्यापार-वाणिज्य, विज्ञान और तकनीक के द्रुत विकास से अछूती नहीं है। आज का साहित्य कल्पना और भावना के सहारे लिखा जानेवाला निरा वाग-विलास नहीं है। वह हमें जीवन-जगत् और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील और उत्तरदायी बनाने का साधन भी है। वह जिस सौंदर्य बोध को आज के मनुष्य के भीतर जगाना और प्रतिष्ठित करना चाहता है, वह सौंदर्यबोध नैतिकता और मानव संवेदनाओं की उपेक्षा करके चलनेवाला सौंदर्यबोध नहीं है। वह सौंदर्यबोध मनुष्य के रूप में हमें इस तरह निखारता है कि हम कुछ और बेहतर तथा और पूर्णतर हो जाते हैं। साहित्य का हमारा पाठ्यक्रम भी ऐसा होना चाहिए जो साहित्य के बारे में और उसकी भूमिकाओं के बारे में आज के विविध अनुशासनों के आलोक में हमें ठोस तरीके से जागरूक और सचेत कर सके। इसलिए साहित्य के विविध उपकरणों और प्रकारों के बारे में एक मूलभूत अभिज्ञता भी विकसित होती चलनी चाहिए। इसलिए यह आवश्यक है कि साहित्य के विविध रूपों, तत्वों, प्रविधियों एवं समसामयिक अवधारणाओं के साथ-साथ साहित्य में प्रयुक्त भाषा, छंद, लय, कल्पना, यथार्थ के अतिरिक्त विविध ज्ञानानुशासनों और कलाओं के समावेश से आनेवाले परिवर्तनों को भी समझा और समझाया जा सके। इसके लिए साहित्यशास्त्र संबंधी आधारभूत मान्यताओं के बोध के लिए एक स्वतंत्र पुस्तिका की परिकल्पना की जानी चाहिए।

9. उद्देश्य:

1. किशोरावस्था से युवावस्था के संधिस्थल पर पहुँचे उन समस्त छात्र-छात्राओं को विमर्श की एक ऐसी भाषा प्रदान करना है जिससे उनमें हिन्दी की एक व्यापक समझ का क्रमिक विकास तो हो ही, उनमें अर्जित की जानेवाली भाषा के अभिव्यक्ति-कौशलों को पहचानते चलनेवाली शक्ति का भी विकास होता चले और वे उन भाषा-कौशलों का उत्तरोत्तर दक्षता के साथ अपने दैनंदिन जीवन में लिखित और वाचिक रूप में प्रयोग भी करते चलें।
1. इस स्तर पर छात्र-छात्राएँ हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन एक सर्जनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और प्रयुक्तियों के दृष्टिकोण से करते हुए हिन्दी के निरंतर विकसित होते हुए अखिल भारतीय स्वरूप से भी अपना परिचय स्थापित करने में समर्थ हो सकें।
1. इस स्तर पर उनमें सर्जनात्मक साहित्य के प्रति रुझान उत्पन्न होगी तथा वे उसके अध्ययन में भरपूर आनंद उठाते हुए उसके गुण-दोषों की पहचान करते हुए स्वतंत्र रूप से उसके आलोचनात्मक आकलन में समर्थ हो सकेंगे।
1. यह बदलाव उनमें हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं, उनके महत्वपूर्ण रचनाकारों तथा शैलीगत विशेषताओं से परिचित करा सकेगा।
1. इस परिवर्तित पाठ्यक्रम से उनमें भाषा की सर्जनात्मक बारीकियों और उसके व्यावहारिक प्रयोग-वैविध्य की समझ उत्पन्न होगी जिससे वे विभिन्न ज्ञानानुशासनों में विमर्श की भाषा के रूप में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका का अनुभव कर सकेंगे।
1. इस पाठ्यक्रम के द्वारा वे विविध संचार-माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी की विविध विधाओं तथा उनकी प्रकृति से परिचित होते हुए उनमें नित्य-नूतन प्रयोगों के प्रति भी प्रेरित और प्रोत्साहित होते रहेंगे।
1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य इस स्तर के कल्पनाशील छात्रों की कल्पना-शक्ति को और भी उद्बुद्ध और सक्रिय करना तो है ही, इस दिशा में उनकी गति को उत्तरोत्तर दृढ़ से दृढ़तर करते हुए उन्हें इस योग्य बनाना भी है कि वे किसी रचना को व्यापक फलक पर रखकर उसकी प्रशंसनीय मूल्यांकन-क्षमता से सम्पन्न हो सकें।

10. शिक्षण-युक्तियाँ:

1. छात्रों और शिक्षकों के बीच अबाध संवाद के लिए दबाव अथवा तनाव मुक्त वातावरण अपेक्षित है। अतएव छात्रों को प्रश्न करने के लिए प्रोत्साहित करना एवं उनके प्रश्नों का समुचित उत्तर देना आवश्यक है। शिक्षण में जोर कठस्थ कराने से अधिक पाठों

की गहरी समझ तथा सम्बद्ध व्याकरण और रचना में पारंगति पर दिया जाना चाहिए।

- 1 उलझनों और शंकाओं का रचनात्मक समाधान करते हुए छात्रों को अधिक से अधिक बोलने और अपनी अभिव्यक्ति करने का अवसर दिया जाना चाहिए। उनके विचारों को महत्व देते हुए अध्यापक द्वारा छात्रों की राय अथवा विचारों को विश्वसनीय रूप से सहेजते हुए व्यवस्थित रूप में पुनर्प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- 1 छात्रों को एक भीड़ या नामहीन समूह के रूप में न देखकर व्यक्तिशः पहचानना और महत्व देना चाहिए। शिक्षकों को यह याद रखना चाहिए कि वे सिर्फ एक अध्यापक नहीं, बल्कि कक्षा में एक कुशल संयोजक भी हैं। छात्रों की टूटी-फूटी, खंडित या अधूरी अभिव्यक्तियों को उन्हें प्रोत्साहन देते हुए पूरा करना चाहिए और उन्हें आगे बढ़कर अधिक समग्रता में सोचने और व्यक्त कर सकने के लिए अवसर अथवा अवकाश देना चाहिए।
- 1 छात्रों को बिना उन्हें तनाव में डाले विषयों पर लिखकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए बढ़ावा देना चाहिए और उनके लिखे हुए को रुचिपूर्वक समुचित ध्यान देते हुए परखना तथा सँवारना चाहिए।
- 1 निर्धारित पाठ्य-पुस्तक से अलग हटकर विद्यालय के पुस्तकालय अथवा दूसरे स्रोतों से ऐसी पुस्तकें पढ़ने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो पठित विषयों और उनसे सम्बद्ध अन्य विषयों की आगे और विस्तृत जानकारी सुलभ कराती हों। इसके लिए पुस्तकों और उनके लेखकों के बारे में छात्रों को निरंतर बताते हुए उनके भीतर उत्कंठा जगानी चाहिए। कक्षा के अध्यापन के पूरे कार्य के रूप में संगोष्ठी, अभ्यास, वर्ग, छात्रों के बीच सामूहिक परिचर्चा, परियोजना-कार्य और स्वाध्याय हेतु वाचनालय में बैठने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। बीच-बीच में लेखक, समाजकर्म या क्षेत्र-विशेष के विशिष्ट जनों को छात्रों के बीच गोष्ठियों में आमंत्रित करने का आयोजन भी आवश्यक है।

11. पाठ्यपुस्तक का स्वरूप :

(वर्ग- XI)

इस वर्ग में 'दिगंत भाग-1' नाम की एक पुस्तक होगी जिसमें 12 गद्य पाठ, 12 पद्य पाठ एवं 3 पाठ द्रुतवाचन के लिए होंगे। गद्य पाठों के चयन में हिन्दी के गद्य-रूपों की विविधता, विकास-क्रम का तो ध्यान रखना होगा ही, साथ ही हिन्दी से इतर दूसरी भाषाओं की भी श्रेष्ठ रचनाओं से छात्रों का परिचय जरूरी होगा। पाठों के चयन में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि छात्र अपनी साहित्यिक विरासत से परिचय प्राप्त करें और साथ ही आधुनिक दृष्टिकोण का भी विकास कर सकें। पद्य खंड में हिन्दी के 12 कवियों की रचनाएँ हिन्दी कविता के विकास-क्रम को ध्यान में रखकर दी जा सकेंगी। यह विकास-क्रम प्राचीनता और आधुनिकता का संतुलित बोध करा सकेगा। इन दो खंडों के अतिरिक्त इस पुस्तक में एक तीसरा खंड द्रुतवाचन का होगा जिसमें एशिया की चुनिंदा तीन कहानियाँ शामिल की जाएँगी। इस खंड को छात्र बिना अतिरिक्त बोझ के पढ़ सकेंगे।

गद्य खंड :

- | | |
|----------------------------|---|
| 1. प्रेमचंद | - पूस की रात (कहानी) |
| 2. रामचंद्र शुक्ल | - कविता की परख (वैचारिक निबंध) |
| 3. कुमार गंधर्व | - भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर (व्यक्तिपरक निबंध) |
| 4. विष्णुभट्ट गोडसे वरसईकर | - आँखों देखा गदर (संस्मरण) |
| 5. सत्यजित राय | - चलचित्र (फिल्म पर निबंध) |
| 6. भोला पासवान शास्त्री | - मेरी वियतनाम यात्रा (यात्रा-वृत्तान्त) |
| 7. कृष्णा सोबती | - सिक्का बदल गया (कहानी) |
| 8. फणीश्वरनाथ रेणु | - उतरी स्वप्न परी : हरी क्रांति (रिपोर्ताज) |
| 9. हरिशंकर परसाई | - एक दीक्षांत भाषण (व्यंग्य) |
| 10. ओदोलेन स्मेकल | - सूर्य (सांस्कृतिक निबंध) |
| 11. मेहरुन्निसा परवेज | - भोगे हुए दिन (कहानी) |
| 12. कृष्ण कुमार | - बुनियादी शिक्षा (भाषण) |

पद्य खंड :

- | | |
|--------------------------------|--|
| 1. विद्यापति | - चानन भेल विषम सर रे, सरस बसंत समय भल पाओल |
| 2. कबीर | - संतो देखत जग बौराना, हो बलैया कब देखौंगी तोहि |
| 3. मीराबाई | - जो तुम तोड़ो पिया, मैं गिरधर के घर जाऊँ |
| 4. सहजोबाई | - मुकुट लटक अटकी मन माही, राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ |
| 5. भारतेन्दु हरिश्चंद्र | - भारत-दुर्दशा |
| 6. मैथिलीशरण गुप्त | - झंकार |
| 7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' | - तोड़ती पत्थर |
| 8. नागार्जुन | - बहुत दिनों के बाद |

- | | |
|-------------------|-----------------|
| 9. त्रिलोचन | - गालिब (सॉनेट) |
| 10. केदारनाथ सिंह | - जगरनाथ |
| 11. नरेश सक्सेना | - पृथ्वी |
| 12. अरुण कमल | - मातृभूमि |



द्वुतवाचन खंड : एशियाई देशों की तीन कहानियाँ।

इस वर्ग में व्याकरण, रचना और साहित्य-रूप की एक पुस्तक होगी जो वर्ग-XI और XII दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में के व्याकरण एवं रचना खंड में संज्ञा, सर्वनाम, कारक, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, अव्यय, काल, क्रिया, निपात आदि व्याकरणिक प्रकरणों के अब तक सीखे जाने हुए तथ्यों के सुव्यवस्थित पाठ एवं अभ्यास वर्ग-XI के लिए होंगे।

साहित्य-रूप वाले खंड में साहित्यशास्त्र, काव्य-रूप और साहित्यिक विधाओं के संबंध में आधारभूत और प्रामाणिक जानकारी होगी जो आकार में लघु होने के बावजूद शब्द-शक्ति, रस, ध्वनि, छंद, लय, अलंकार के अतिरिक्त महाकाव्य, खंडकाव्य, चम्पूकाव्य, मुक्तक, प्रगीत तथा गद्य की विविध विधाओं एवं रचना-रूपों, जैसे- निबंध एवं उसके प्रभेदों के साथ-साथ उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, शब्दचित्र, जीवनी, संस्मरण तथा नाटक एवं एकांकी विषयक तात्विक बोध छात्रों को कराने में समर्थ होगी।

पूरक पाठ्य पुस्तक : पूरक पाठ्य-पुस्तक के रूप में 'हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा' नाम की एक पुस्तक होगी। यह पुस्तक कक्षा-XI एवं कक्षा-XII दोनों के लिए होगी। इस पुस्तक में हिन्दी भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास होगा। इस इतिहास में हिन्दी साहित्य के विभिन्न युगों की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, प्रमुख रचनाओं एवं रचनाकारों के बारे में होंगे। इसका विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि ऐतिहासिक विकास की निरंतरता का समुचित बोध हो सके। कक्षा-XI के छात्र इस पुस्तक के उन्हीं हिस्सों को पढ़ेंगे जिनमें आदिकाल से लेकर 19वीं शती तक का साहित्यिक इतिहास होगा।

(वर्ग- XII)

इस वर्ग में 'दिगंत भाग-2' नाम की पुस्तक होगी जिसमें 15 गद्य पाठ, 15 पद्य पाठ एवं 3 द्वुतवाचन के लिए होंगे।

गद्य खंड :

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| 1. चंद्रधर शर्मा गुलेरी | 2. बालकृष्ण भट्ट |
| 3. शिवपूजन सहाय | 4. रामधारी सिंह 'दिनकर' |
| 5. विष्णु प्रभाकर | 6. अज्ञेय |
| 7. जगदीशचंद्र माथुर | 8. मोहन राकेश |
| 9. नामवर सिंह | 10. जयप्रकाश नारायण |
| 11. पद्मा सचदेव | 12. दलित आत्मकथा |
| 13. उदय प्रकाश | 14. पंकज विष्ट |
| 15. जे. कृष्णमूर्ति | |

पद्य खंड :

- | | |
|-------------------------|-----------------------|
| 1. जायसी | 2. सूरदास |
| 3. नाभादास | 4. ताज बीबी/चांद बीबी |
| 5. घनानंद | 6. भूषण |
| 7. सुभद्रा कुमारी चौहान | 8. जयशंकर प्रसाद |
| 9. शमशेर बहादुर सिंह | 10. मुक्तिबोध |
| 11. रघुवीर सहाय | 12. राजकमल चौधरी |
| 13. विनोद कुमार शुक्ल | 14. ज्ञानेन्द्रपति |
| 15. गगन गिल | |

द्वुतवाचन खंड : विश्व के विभिन्न देशों की तीन कहानियाँ।

इस वर्ग में व्याकरण, रचना और साहित्य-रूप की एक पुस्तक होगी। इस पुस्तक को छात्र वर्ग-XI में ही देख चुके होंगे लेकिन वर्ग-XII के लिए व्याकरण के बिन्दु निम्न प्रकार के होंगे- संधि और उसके भेद, समास और उनके प्रकार, पदबंध, वाच्य और उनके भेद, वाक्य प्रकार, पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्द, संक्षेपण, मुहावरे और लोकोक्तियाँ, वाक्य-संशोधन, उपसर्ग एवं प्रत्यय (इसके अतिरिक्त संस्कृत, फारसी आदि विदेशी भाषाओं के हिन्दी में प्रचलित प्रत्यय एवं उपसर्गों का अभ्यास भी आवश्यक है)। इसके अतिरिक्त निबंध, वार्ता, टिप्पणी, पत्र (अनेक रूप) आदि के लेखन से जुड़े अभ्यास वांछित होंगे। साहित्य रूप वाले खंड में आधुनिक कविता को समझने के लिए आवश्यक पारिभाषिक जानकारी दी जा सकेगी। बिम्ब, प्रतीक, रूपक, फंतासी, कल्पना और यथार्थ, मूर्तन एवं अमूर्तन आदि विषयक अवधारणाएँ सुगम रूप से समझाई जा सकेंगी।

इस वर्ग में भी पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में 'हिन्दी भाषा और साहित्य की कथा' ही होगी। इस पुस्तक को छात्र वर्ग-XI में देख चुके

में देख चुके

होंगे, किन्तु छात्र वर्ग-XII

में इस पुस्तक के उस अंश को पढ़ेंगे जिसमें 19वीं शती से अब तक के हिन्दी भाषा और साहित्य के विकासक्रम की निरंतरता का समुचित बोध होगा। साथ ही आधुनिक युग में साहित्य में विविध विधाओं के उदय और विकास की प्रामाणिक झलक होगी।

12. मूल्यांकन:

वर्ग-XI-XII : XI का मूल्यांकन IX वर्ग की तरह एवं XII का मूल्यांकन X वर्ग की पद्धति पर किया जाना चाहिए।

13. परीक्षा:

1. वर्ग-IX एवं XI में तीन सावधिक परीक्षाएँ होंगी। प्रत्येक का पूर्णांक-100 होगा। इसमें अंकों का विभाजन इस प्रकार होगा—

1. सतत व्यापक मूल्यांकन : 20%

1. सावधिक/लिखित परीक्षा : 80%

1. दूसरी सा० प० में पहली के अध्ययन क्षेत्र से 30% एवं अंतिम सा० प० में पहले अध्ययन क्षेत्र के 10% तथा दूसरे अध्ययन क्षेत्र से 20% प्रश्न चुने जायेंगे।

अंतिम (वार्षिक) मूल्यांकन में से 40% (लिखित पूर्णांक/प्राप्तांक का आधा)

प्रथम सा० परीक्षा के 20% (लिखित का 1/4)

द्वि० सा० परीक्षा के 20% के साथ जोड़कर

सतत व्यापक मूल्यांकन 20% (तीनों का औसत प्राप्तांक)

मिला देंगे। यही वार्षिक परीक्षाफल होगा।

1. XI एवं XII वीं कक्षा में पूर्णांक एवं प्राप्तांक इस प्रकार होंगे—

सतत-व्यापक मूल्यांकन 10%

(आंतरिक मूल्यांकन)

विगत वर्ग में परीक्षाफल प्राप्तांक का 10%

(वर्ग-IX/XI)

लिखित परीक्षा 80%

100%

1. इस प्रकार कुल 100 अंकों के पूर्णांक में 20 आंतरिक एवं 80 बोर्ड परीक्षा के होंगे।

1. लिखित परीक्षा में 50% प्रश्न बहुवैकल्पिक होने चाहिए। जहाँ आवश्यक है व्यावहारिक परीक्षा में मौखिक, क्रिया-विधि एवं प्रयोग-पुस्तिका के 20% अंक रहेंगे।

14. अपेक्षित अधिगम:

उच्चतर वर्गों में भाषा, साहित्य, व्याकरण और रचना के क्षेत्रों में अर्जित ज्ञान और कौशल की संकल्पना ऐसी की गई है कि छात्र आगे के उच्चतर और विशेषोन्मुख अध्ययन के लिए अनिवार्य आधार हासिल कर लें तथा सूचना, ज्ञान, कौशल, अनुभव, संवेदन, अभिव्यक्ति एवं सम्प्रेषण आदि के धरातल पर अपने भीतर कहीं अटक, अवरोध या न्यूनता नहीं महसूस करें। उनके भीतर किसी विषय पर अकुंठ भाव और मौलिक रीति से सोचने, चिंतन करने और अभिव्यक्त करने की सामर्थ्य आ जाय। उनके चिंतन-व्यवहार और कल्पना में वस्तुपरकता, दृढ़ता, तार्किकता, समावेशिता और औदार्य जैसे गुणों का सन्निवेश हो सके। वे अपनी संकल्पना को कौशलपूर्वक मूर्त कर सकें, कारण-कार्य-परिणाम की चेतना के साथ निर्णयक्षमता से संपन्न हो सकें। उनके अकेलापन, विच्छिन्नता, अवसाद और निराशा की मनोवृत्तियों के स्थान पर उत्साह, लगन, ध्येयनिष्ठा, क्रियाशीलता, दिशाबोध, आशावाद, मानसिक बौद्धिक स्फूर्ति आदि के भाव बद्धमूल हों, ताकि शिक्षा के गूढ़ और व्यापक प्रयोजन सिद्ध या चरितार्थ हो सकें।

इन वर्गों के अध्ययन के बाद छात्रों को हिन्दी भाषा और साहित्य के सुदीर्घ इतिहास, उसके युगों, परम्पराओं, प्रवृत्तियों और प्रमुख रचनाकारों, उनकी कृतियों आदि के संबंध में संक्षिप्त और प्रामाणिक जानकारी हो जायेगी। ऐसी जानकारी जो उनमें संबद्ध विषयों के आगे और अधिक ज्ञानार्जन हेतु विनम्र जिज्ञासा उत्पन्न करे और उसकी संतुष्टि के लिए उन्हें सचेष्ट करे। छात्रों में हिन्दीतर देशी और विदेशी भाषाओं और उनके साहित्य के प्रति न केवल आदर-सम्मान के सद्भावमूलक भाव परिपुष्ट हों, बल्कि उन्हें अपनी भाषा में सुलभ अनुवादों और मूल में भी प्रत्यक्ष जानने की उत्सुकता पैदा हो। एतदर्थ सह-शैक्षणिक गतिविधियों में अभ्यासात्मक उन्मुखीकरण की चेष्टाएँ वांछित हैं।

व्याकरण और रचना के अभ्यास, जो बहुलांशतः पाठाधारित और परिमाण में विपुल होंगे, ऐसे होंगे कि अबतक पढ़े-सीखे-समझे की परीक्षा आवृत्ति हो जाय और नया बहुत कुछ जानने-समझने-सीखने को मिल सके। इतना ही नहीं छात्रों के आगे इन विषयों में आगे और क्या कुछ जानना, सीखना-पढ़ना और समझना है, इसकी एक झलक मन में जग सके।

इन कक्षाओं के पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्याओं की भूमिका मानसिक-बौद्धिक-नैतिक और सौंदर्यबोधात्मक धरातल पर एक ऐसी समन्वित तैयारी के लिए ही प्रधान रूप से परिकल्पित है जिसके भरोसे छात्र आत्मनिर्भरता पूर्वक आगे के विशेषोन्मुख अध्ययन में कुशलतापूर्वक लग सकें और प्रगति कर सकें।

15. घंटियों का आवंटन (साप्ताहिक) :

वर्ग- XI एवं XII : हिन्दी भाषा-6 घंटियाँ।

Syllabus of Urdu For Class : XI & XII

اردو کا نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم

اردو تعلیم: ضرورت اور مقاصد

اردو ہندوستان کی مختلف زبانوں کے درمیان اپنی علاحدہ شناخت رکھتی ہے۔ اس زبان کے بولنے اور سمجھنے والے صرف ہندوستان ہی نہیں، دنیا کے متعدد ملکوں میں پائے جاتے ہیں۔ اس کا ادب ابتدا سے ہی مقبول اور قابل قدر اہمیت کا حامل رہا ہے۔ اس کا پیش قدمی اور وقیع ادبی سرمایہ دنیا کی کسی بھی ترقی یافتہ زبان کے مقابلے میں اعتدال و اتقار کے ساتھ پیش کیا جاسکتا ہے۔ چونکہ یہ زبان عربی، فارسی، ترکی، فرانسیسی اور دوسری ہندوستانی زبانوں کے نرم و سبک الفاظ کی آمیزش سے بنی ہے، اس لیے اس کی شیرینی اور کشش دو بالا ہو گئی ہے۔ اس کے سبب دلچسپی میں وہ گلاٹ اور مٹھا س ہے جس کی ایک دنیا معترف ہے۔ یہی سبب ہے کہ دوسری زبانوں کے لوگ بھی اس سے متاثر ہوئے بغیر نہیں رہ سکتے۔ اردو ہماری مشترکہ تہذیب و تمدن کی پیداوار ہے۔ اس زبان نے ابتدا سے ہی ہم آہنگی، حب الوطنی، باہمی یکا گت اور اخوت کا پیغام عام کیا ہے۔ ماہرین لسانیات کے مطابق اس کا خمیر کھڑی بولی سے تیار ہوا ہے لیکن اس کی تعمیر و تشکیل میں جیسا کہ عرض کیا گیا عربی، فارسی، سنسکرت اور ترکی کے علاوہ دوسری کئی زبانوں کے الفاظ کا بہت اہم ردل ہے۔ مذکورہ بالا خصوصیات کی بنا پر اس زبان کی تدریس اور اس کی تشہیر سے قوی یک جہتی کو فروغ حاصل ہوگا اور ملک کی بہبود اور سالمیت کو استحکام حاصل ہوگا۔

دنیا کے تمام ماہرین تعلیم اس بات پر متفق ہیں کہ طلبہ کی ذہنی نشو و نما اور ان کی شخصیت کی تعمیر میں مادری زبان ہی سب سے زیادہ معاون ثابت ہوتی ہے۔ یہ ایک فطری بات ہے کہ طلبہ اپنی مادری زبان کو جس طور پر سمجھتے ہیں، شاید ہی کسی دوسری زبان کو سمجھ سکیں۔ استثنائ کی بات اور ہے۔ اس لیے طالب علم جب اپنی مادری زبان میں کسی موضوع اور سبجیکٹ کو پڑھتا ہے تو بہت تیزی اور آسانی سے اس کی تفہیم ہوتی ہے۔ بچے جب اسکول میں داخلہ لیتے ہیں تو ابتدا میں ان کی ذہنی سطح پختہ نہیں ہوتی۔ شروع میں مادری زبان کی سطح پر بھی وہ ابتدائی منزلیں طے کر رہے ہوتے ہیں۔ لہذا زبان کی تدریس کا سب سے پہلا اور اہم مقصد یہ ہوتا ہے کہ طلبہ اپنی عمر اور جماعت کے مطابق صحیح پڑھنا، صحیح بولنا اور درست املا لکھنا سیکھ لیں۔ ساتھ ہی ان کے سوچنے، سمجھنے اور درست تا درست کو پرکھنے کی صلاحیت بھی بڑھتی جائے۔ اور وہ بہ آسانی کسی بات کو سمجھ لیں اور روزمرہ کے تجربات و مشاہدات کو اپنی زبان میں ربط کے ساتھ بیان کرنے اور انھیں تحریری شکل دینے میں بہت حد تک کامیاب ہو جائیں۔ زبان سیکھنے کے ساتھ طلبہ اپنے ماحول، گرد و پیش اور دوسرے کوائف سے بھی واقف ہوتے ہیں۔ اس کے ساتھ وہ

سماجی و تہذیبی قدروں سے بھی بحسن و خوبی آشنا ہو جاتے ہیں۔ ابتدائی مرحلے کے بعد طلبہ کی ذہنی وسعت میں اضافہ کے لیے انھیں صوبائی اور ملکی حالات سے باخبر کرنا لازمی ہوتا ہے۔ تدریس کے اہم مقاصد میں ایک اہم مقصد یہ بھی ہے کہ طلبہ رفتہ رفتہ اپنے ملک کے مختلف حصوں اور نکلوں میں بسنے والے مختلف فرقوں، طبقات اور قبیلوں کی بابت معلومات حاصل کریں۔ ان کے رہن کمن، ان کی طرز رہائش اور طور طریقے کی جانکاری حاصل کریں اور سبھوں کے جذبات و احساسات اور عقائد کا احترام کرنا سیکھیں۔ تعلیم کا ایک بنیادی مقصد یہ بھی ہے کہ باہمی میل جول اور بھائی چارہ کے ماحول کو فروغ دیا جائے اور امن و آشتی کی نفا سازگار بنائی جائے۔ ان کے جذبہ حب الوطنی کو تحریک دی جائے۔ آئین کے ذریعے دیے گئے حقوق، فرائض اور

اختیارات سے آگاہ کیا جائے۔

ہمارا ملک طویل جنگ آزادی کے بعد انگریزوں کے چنگل سے آزاد ہوا ہے۔ ملک عزیز کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کے لیے ہمارے بزرگوں نے اپنی جانیں قربان کی ہیں۔ تب جا کر ہم آزاد ملک کے باشندہ کہلانے کے لائق ہوئے۔ اس لیے طلبہ میں آزادی کا احترام اور اس کے تحفظ کا جذبہ پیدا کرنا اور ملک کے آئین کے تین انھیں باخبر کرنا لازمی ہے۔ حقوق کی شناخت کے ساتھ ان میں فرائض کی ادائیگی کا چلن بھی راہ پائے، اس کے لیے مناسب ذہن سازی ہونی چاہیے۔ ساتھ ہی ساتھ طلبہ کی تعلیم و تربیت اس رخ پر ہو کہ ان کا مزاج حقیقت پسندانہ، سائنسی اور منطقی ہو سکے۔

طریقہ تدریس

درس و تدریس کا کام بہت ہی محنت، توجہ اور ہنرمندی کا متقاضی ہے۔ ابتدا میں بچوں کا ذہن کورا ہوتا ہے۔ ان کے اذہان نئی چیزوں کو سیکھنے کے لیے پوری طرح تیار نہیں ہوتے ہیں۔ ساتھ ہی ان کے اندر استاد کا خوف ہر دم بیٹھا رہتا ہے۔ بھگ، گھبراہٹ اور شرمیلان بھی موجود ہوتا ہے۔ اس لیے استاد کو چاہیے کہ بچوں کے درمیان وہ اس طرح خود کو پیش کرے کہ بچے اسے اپنا دوست سمجھیں۔ ان کے دل سے ڈر اور بھگ جاتا رہے اور وہ حوصلے اور اُملک کے ساتھ سیکھنے کے مرحلے سے گزرتے رہیں۔ استاد کو ان کی ذہنی سطح کو ہمہ وقت پیش نظر رکھنا چاہیے اور یہ مان کر چلنا چاہیے کہ ان سے قدم قدم پر غلطیاں سرزد ہوں گی۔ وہ غلطیاں پڑھنے لکھنے میں ہوں یا افعال و کردار میں، بچوں کے ذریعے کچھ بھی ممکن ہے۔ اس موقع سے استاد کو بہت ہی مبرا اور تحمل سے کام لینا ہوگا۔ غصہ، تھلاہٹ اور مار پیٹ کی جگہ انھیں حکمت اور تدبیر سے قابو میں کرنا ہوگا۔ بچوں کو پیار اور ہمدردی سے مخاطب کرنا، ان کے ساتھ ہنسنا بولنا، ان کے حق میں بہت مفید ہوگا اور وہ بخوشی استاد کی بات سننے، سمجھنے اور پھر اس پر عمل کرنے کے لیے راضی ہو جائیں گے۔ درجے میں اس طرح کا خوشگوار ماحول بنانا از حد لازمی ہے تاکہ طلبہ کھل کر اپنے استاد سے سوالات کر سکیں، ان سے نئی باتوں کی بابت پوچھ سکیں، توجہ اور انتہاک کے ساتھ استاد کی باتیں سنیں۔ بیک بورڈ پر جو کچھ سبق سے متعلق لکھا جائے، اسے وہ بہت لچل کر سنیں۔

بعض اساتذہ جماعت میں داخل ہوتے ہی چہرے پر خشونت کے آثار طاری کر لیتے ہیں جس سے بچے کسم کسم جاتے ہیں۔ اس پر سے مستزاد یہ کہ وہ حد درجہ سنجیدہ اور پارصوب لہجہ اپنا لیتے ہیں جس کے سبب استاد اور طلبہ کے بیچ ایسا خوشگوار ماحول نہیں بن پاتا جو پڑھنے پڑھانے کے لیے ضروری ہوتا ہے۔ طلبہ میں سیکھنے کا شوق اور خود اعتمادی پیدا کرنے کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جائے۔ ان کے کام کی دقتا فو قتا تعریف کی جائے۔ بچے مناسب شاہشی سے تحریک پاتے ہیں اور ان کے اندر مزید سیکھنے کا جذبہ پیدا ہوتا ہے۔ ایک کامیاب استاد وہی ہے جو طالب علموں کو اپنے حرم میں رکھے۔ ان کے دلوں میں اپنے لیے احترام پیدا کرے۔ طلبہ کے اندر تجسس کو ابھارے۔ انھیں محنت کرنے پر آمادہ کرے۔ بات بات پر ڈانٹنا، پھٹکارنا، سنسنی، کال اور کام چور بیسے الفاظ استعمال کرنے سے حوصلے پست ہوتے ہیں اور ذہن بچے بھی کند ذہن ہونے لگتے ہیں۔ جیسا کہ عرض کیا گیا کہ بچے سے غلطیاں ہوں گی ہی لیکن ایک کامیاب استاد کا کام ہے کہ وہ ان کی مسلسل اصلاح کرتا رہے۔ وہ غلطیوں پر انھیں نرم لہجے میں سمجھائے۔ انھیں اچھے برے کی تمیز سکھائے۔ اس سلسلے میں وہ مثالیں بھی دے کہ کیسے ایک لڑکا اپنی محنت اور لگن سے کامیاب ہوتا ہے اور اپنا اور ملک کا نام روشن کرتا ہے۔ نیز کس طرح ایک ست، ضدی اور بد معاش لڑکا اپنے ناکارہ پن کے سبب کچھ نہیں بن پاتا اور آگے چل کر درویش کی ٹوکریں کھاتا ہے۔

جماعت میں جو طلبہ ہوتے ہیں وہ مختلف طبقات سے تعلق رکھتے ہیں۔ اس لیے ان کی ذہنی سطح ایک نہیں ہوتی۔ استاد کا فریضہ یہ ہے کہ وہ بچوں کی ذہنی سطح کو ملحوظ رکھتے ہوئے ان کی تربیت کرے۔ ساتھ ہی وہ کمزور بچے پر خصوصی توجہ دے تاکہ وہ بھی رفتہ رفتہ اپنے ہم جماعتوں کی برابری میں آسکے۔



استاد کو کلاس روم میں ایک ہی لب دلچیز اور محسوسات انداز میں اپنانا چاہیے۔ کبھی ہنستا، کبھی بولتا، کبھی لطیفے اور کبھی کہانیاں سناتا بھی ضروری ہے تاکہ بچے کی تفریح بھی ہو اور اسی بہانے وہ سیکھتا بھی رہے۔ استاد کو چاہیے کہ وہ درس کے دوران طلبہ سے سوالات کرے اور انھیں بولنے پر اکسائے۔ اس طرح ان کی گویائی کی صلاحیت میں اضافہ ہوگا۔ استاد مشکل کو آسان بنانے کے لیے ہے نہ کہ آسان کو مشکل بنانے کے لیے۔ اس لیے لازمی ہے کہ استاد جس موضوع کو پڑھایا سمجھایا ہو، اس کی جزئیات پر بھی اس کی گہری نظر ہو۔ جیسا کہ عرض کیا گیا وہ پوری جماعت پر نظر تو رکھے ہی، ساتھ ہی انفرادی طور پر بھی کمزور بچوں پر توجہ دے۔ استاد کو ہر دم اپنی ذمہ داریوں کا احساس ہونا چاہیے جب ہی جا کر درس و تدریس کا مقصد پورا ہوگا۔ کیوں کہ طلبہ قوم کی امانت ہی نہیں ملک کا مستقبل بھی ہوتے ہیں۔ اگر درس و تدریس میں خامی رہی تو آگے چل کر اس کا نتیجہ بہت ہی ضرر رساں ہوگا۔

درجہ یازدہم تا دوازدہم

تمہید

اردو کو یہ اعزاز حاصل ہے کہ یہ خالصتاً ہندوستان کی زبان ہے۔ اس زبان کی یہ انفرادیت بھی ہے کہ یہ مختلف مذہب و ملت اور تہذیب و ثقافت کے افراد کے درمیان تبادلہ خیال کے وسیلے کے بطور معروض وجود میں آئی۔ اس طرح اس کے عناصر ترکیبی میں وہ اجزا خود بخود شامل ہو گئے جو مشرق و تہذیب کے ترجمان ہیں۔ اردو کی مقبولیت اور اثر انگیزی کا راز بھی یہی ہے کہ ہر فرد اس میں اپنے مزاج کی ہم آہنگی اور ذریعہ اظہار کی مطابقت محسوس کرتا ہے۔

دسویں جماعت کی تکمیل تعلیم کے بعد طلبہ ذاتی اور شعوری سطح پر اس لائق ہو جاتے ہیں کہ انھیں کسی زبان کی باریکیوں سے روشناس کرایا جائے لیکن یہ عمل ایسا نہ ہو کہ طلبہ اسے چیزے دیگر محسوس کرنے لگیں۔ یہاں ارتطاط کا ایسا رد یہ اپنانا چاہئے کہ طلبہ اسے پچھلی جماعتوں کے اسباق کی توسیعی شکل محسوس کریں۔ اس مرحلے میں طلبہ کو اس نچ پڑا سنے کی ضرورت ہے کہ وہ زبان کی عملی حیثیتوں سے باخبر ہو سکیں۔ طلبہ کی ذہن سازی کا یہ درجہ بھی ملحوظ رہنا چاہیے کہ گیارہویں اور بارہویں جماعت میں اردو زبان کی تعلیم صرف اس لیے نہیں ہو رہی ہے کہ گریجویٹیشن میں وہ معاون ہو بلکہ اس کا مقصد یہ بھی ہے کہ مختلف شعبہ ہائے حیات میں یہ کامیابی کی ضمانت دار ہو۔

مقصد

- ۱۔ طلبہ کا علم اور زبان اس معیار کو پہنچ جائیں کہ تقریر و تحریر کے کسی محاذ پر انھیں کمتری یا پستی کا احساس نہ ہو۔ اپنے مافی الضمیر کے اظہار میں وہ اجماع و محسوس نہ کریں۔ تعریف، تردید اور طنز و مزاح کی ادائیگی کے اہل ہو جائیں۔ نیز لہجہ اور اسلوب کی کنہیات سے بھی محفوظ ہو سکیں۔
- ۲۔ کسی کی گفتگو کے ماحصل کی تفہیم اور اس پر اپنی رائے قائم کرنے کے قابل ہو سکیں۔
- ۳۔ کسی نکتے یا دعوے کی حمایت و مخالفت میں مناسب دلیلیں قائم کر سکیں۔
- ۴۔ طلبہ انتقادی اور تجزیاتی شعور کو فروغ دے سکیں۔
- ۵۔ مختلف ذرائع سے مواد کی فراہمی اور اس سے استفادہ کر سکیں۔

طریقہ تدریس

اس منزل تک آئے آتے طلبہ میں انفرادی زاویہ نگاہ سے کسی بھی شے کو دیکھنے کی خواہش ابھرتی ہے۔ اس لیے اساتذہ کو چاہیے کہ یک لخت ان کے خیالات کی تردید نہ کریں۔ اگر ان کی تفہیم میں انتشار یا خامی ہو تو انھیں ہمدردانہ طور پر مثبت سمت دینے کی کوشش کریں۔ کسی فن پارے پر رائے دینے والے ایسے امکانات ضرور پیدا کریں کہ طلبہ کے ذہن میں سوالات ابھرنے لگیں۔

خاکہ نصاب برائے درجہ یازدہم

گیارہویں اور بارہویں جماعت کے لیے الگ امتحانات اور نصابی کتب انتظام کے باوجود ان میں داخل طور پر اشتراک لازمی ہے۔ دونوں جماعتوں کے مشمولات سے ادب کی ارتقاء کی تصویر بھی ابھرنی چاہیے۔

مشمولات کا انتخاب کرتے ہوئے بہار کے نمایندہ شعراء اور مصنفین کی مناسب حصے داری ملحوظ رکھنی چاہیے۔ اسباق سے قبل ان سے متعلق صنف اور صنف کا تعارف شامل ہونا ضروری ہے۔ اسباق کے آخری میں ”مشق“ کے تحت حل مشکلات اور متن سے متعلق ممکنہ سوالات کی فہرست بھی لازمی ہے۔

نثر و نظم کی اہم اصناف دونوں جماعتوں میں شامل ہوں گی۔ ان کے علاوہ قلیل الاستعمال یا غیر معروف اصناف کے تعارف اور نمونے بھی شامل ہوں گے تاکہ اردو ادب کے مجموعی سرمایے کا خاکہ طلبہ کے سامنے آ سکے۔

نصابی کتاب کا خاکہ درجہ یازدہم

کھکشاں حصہ اول 1-भाग कहकशाں Kahkashan Part-I

حصہ نثر

- ۱۔ خطبہ ایک مثال (انیسویں صدی)
- ۲۔ خط تین مختصر دو بی خطوط (انیسویں صدی)
- ۳۔ افسانہ چار افسانے مختلف ادوار کے اعتبار سے (کم سے کم ایک خاتون اور ایک افسانہ نگار بہار سے ہونا چاہیے)
- ۴۔ ترجمہ جنوبی ہندوستان کی کسی زبان کا افسانہ
- ۵۔ علمی مضمون طلبہ کے حراج کے اعتبار سے اصلاحی نوعیت کا مضمون
- ۶۔ ناول ایک اقتباس انیسویں صدی سے
- ۷۔ نظریات مضمون دو مضامین
- ۸۔ ڈراما ایک عدد
- ۹۔ خاکہ ایک عدد
- ۱۰۔ انٹرویو ایک (اویس کا)

حصہ شاعری

- ۱۔ حمد ایک عدد کسی جدید شاعر کی
- ۲۔ نظم سات شعرا حمد قدیم سے موجودہ دور تک کے شعرا کم از کم ایک خاتون، ایک غرافت نگار اور ایک بہار سے ہونا چاہیے۔
- ۳۔ ترجمہ ایک عدد بہار کے کسی ہندی شاعر کی ایک نظم جس کا تعلق ہندوستانی تہذیب یا پس منظر سے ہو۔
- ۴۔ غزل دس غزلیں پانچ شعرا کی دو دو غزلیں
- ۵۔ قصصی مرثیہ ایک کسی ہم عصر شاعر کا
- ۶۔ مثنوی دو کم از کم ایک بہار سے متعلق ہو۔
- ۷۔ رباعی تین شعرا کی پانچ پانچ رباعیات منتخب کی جائیں۔
- کم از کم ایک شاعر بہار کا ہو اور کم از کم ایک غیر مسلم ہو۔





نصابی کتاب کا خاکہ درجہ دوازدہم

کھکشاں حصہ دوم II-भाग कहकशाँ Kahkashan Part-II

حصہ نثر

- ۱- ترجمہ غیر افسانوی نثر سے کسی غیر مسلم سیاسی رہنما کی تحریر سے اقتباس
- ۲- سفرنامہ ایک اقتباس پاکستان کا سفرنامہ
- ۳- داستان دو مثالیں (ایک فورٹ ولیم کالج سے اور دوسری علاحدہ)
- ۴- افسانہ پانچ افسانے کم از کم ایک خاتون، ایک غیر مسلم اور ایک بہار کا ضرور ہونا چاہیے۔
- ۵- تنقیدی مضمون تین مقالوں کے مضامین
- ۶- انشائیہ دو نمونے
- ۷- خودنوشت دو نمونے
- ۸- رپورتاژ ایک نمونہ
- ۹- روزنامہچہ ایک نمونہ

حصہ شاعری

- ۱- حمد ایک
- ۲- غزل دس غزلیں پانچ شعرا کی دو-دو غزلیں
- ۳- قصیدہ دو شعرا کے قصائد سے اقتباس
- ۴- مہرِ قافہ نظم دو شعرا کی نظمیں
- ۵- آزاد نظم چار شعرا کی نظمیں، کم از کم ایک خاتون ضرور ہوں
- ۶- ترجمہ جوتی ہندستان کی زبان کے کسی ایک شاعر کی نظم کا ترجمہ
- ۷- مثلث ایک نمونہ
- ۸- مرثیہ دو نمونے
- ۹- گیت دو شعرا کے نمونے (پہ شمول ملی نغمے)
- ۱۰- قطعات تاریخ چار شعرا کے نمونے جن میں کم از کم ایک خاتون اور ایک بہار سے تعلق رکھتا ہو۔

معاون درسی کتابیں

Supplementary Readers

طلبہ کی گونا گوں دلچسپیوں میں اضافہ کی غرض سے درسی کتابوں کے ساتھ خصوصی موضوعات پر مختصر معاون درسی کتابوں کی ضرورت کو محسوس کرتے ہوئے چھٹی سے بارہویں جماعت تک ایک معاون درسی کتاب شامل نصاب کی گئی ہے۔ طلبہ کی ضرورتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے ان کے موضوعات اور دائرہ کار کا تعین کیا گیا ہے۔ کتابوں کی درج ذیل تفصیل ملاحظہ ہو۔

برائے درجہ دوازدھم و یازدہم

اردو زبان و ادب کی تاریخ

بارہویں کلاس میں اردو زبان و ادب کی تاریخ کے موضوع سے ایک مستقل لیکن مختصر کتاب اس مقصد سے شامل کی جارہی ہے تاکہ طالب علم پر یک نظر اردو ادب کے تشیپ و فرائز سے واقف ہو جائے۔ مختلف اصناف، ادبی رویوں اور علاقائی صورت حال پر بھی اس میں واضح طور پر معلومات فراہم کی جائیں گی۔

اردو زبان و ادب کی تاریخ، ابتدا تا حال

اردو زبان کی پیدائش

دکن میں اردو ادب

شمالی ہند میں اردو ادب، اٹھارویں صدی تک

اردو نثر، آغاز سے ۱۸۵۷ء تک

اردو شعر و ادب، انیسویں صدی کے نصف اول تک

۱۸۵۷ء کے بعد اردو زبان و ادب

جیسویں صدی میں اردو ادب کا ارتقاء، ۱۹۴۷ء تک

اردو ادب آزادی کے بعد

بہار میں اردو زبان و ادب

اردو ادب کی تحریکیں

اردو غزل کا ارتقاء

اردو کی دیگر شعری اصناف

اردو افسانہ اور ناول

اردو نظم کا ارتقائی سفر

اردو ڈراما

اردو طرائق

اردو صحافت

اردو میں بچوں کا ادب

تحریک آزادی میں اردو کا حصہ

قومی یکجہتی اور اردو!





انسانی اقدار اور دیگر موضوعات

جمہوریت، سوشلزم، اردو اداری، خیر، خدمتِ خلق، عدل و انصاف، اعلا اصولوں کی پاسداری، رہنمائی، ہندستان کی اہمیت دنیا کی نگاہ میں، ہندستانی مصوری، دل سے داری کا احساس، کمپیوٹر، آمدورفت کے ذرائع، اخلاقیات، فاصلاتی نظام تعلیم،

قواعد کے اجزا

برائے یازدہم و دوازدہم

- (۱) تحلیل صرفی و نحوی
- (۲) اشعار، تذکیر و تائید، واحد جمع
- (۳) محاورے، ضرب الامثال، سابقہ اور لاحقہ تاریخی اسامیات؛
- (۱) زبانوں کی گروہ بندی (ii) ہند آریائی کا ارتقا (iii) مغربی ہندی اور اس کی بولیاں (iv) اردو کی پیدائش
- (۴) صوتیات
- (۵) اردو کا سرمایہ الفاظ
- (الف) اردو رسم خط، لفظ سازی، اصطلاحات (مختلف شعبہ ہائے مضامین سے اہم اصلاحوں کی فہرست)
- (۶) حقیقی اور مجازی معنی کا فرق
- (۷) ایہام، تخیل، عارفانہ، تلمیح کی تعریف اور اردو کی اہم تالیفات (اشعار کے حوالے سے)
- (۸) تلمیح، استعارہ، کنایہ اور مجاز مرسل کی تعریف
- (۹) مطلع، حسن، مطلع، قطع، تاقیہ، حرف روی، اور ردیف کی تعریف، مرثیہ اور غیر مرثیہ غزل کی تعریف
- (۱۰) متحرک، ساکن، وزن، بحر، رکن، سبب، وند، فاصلہ اور قطع کی تعریف
- (ii) ارکانِ غزل، گانہ اور ان کے نام
- (۱۲) قطع کے اصول و ضوابط
- (۱۳) بحر، بجز، بحر بجز اور مقارب پر مشتمل اشعار کی قطع (سالم بحر)
- (۱۴) اسلوب کے اعتبار سے مثنوی قسمیں
- مثنوی، مثنوی، عاری
- (۱۵) خطوط اور مضامین

تقسیم اعداد

XI & XII

(5+6+4)	=	15	۱- درسی کتاب حصہ نظم
(5+6+4)	=	15	۲- درسی کتاب حصہ نثر
(8+5+5)	=	18	۳- معاون درسی کتاب
(5+5+5+3)	=	18	۴- قواعد
		08	۵- مضمون نویسی
		08	۶- خط نویسی یا عرض نویسی
		06	۷- پیرا گراف نویسی
		06	۸- غیر نصابی متن اور اس سے متعلق سوالات
		06	۹- غیر نصابی متن (نثر یا نظم) کی تشریح
		100	

ہدایات

- (۱) درسی کتاب سے حصہ نظم اور حصہ نثر سے پانچ علاحدہ معروضی سوالات (10=5+5) نمبر کے پوچھے جائیں گے۔ حصہ نظم اور نثر کے اسباق سے متعلق علاحدہ علاحدہ (12=6+6) نمبر کے متن سے واقفیت کو نگاہ میں رکھتے ہوئے سوالات پوچھے جائیں گے۔ حصہ نظم اور نثر سے علاحدہ علاحدہ تشریح کی غرض سے (08=4+4) نمبر کے سوالات پوچھے جائیں گے۔
- (۲) معاون درسی کتاب سے 08 نمبر کے معروضی سوالات پوچھے جائیں گے۔ اس کے علاوہ (10=5+5) نمبر کے دو سوالات معاون درسی کتاب کے متن سے پوچھے جائیں گے۔
- (۳) قواعد سے 5 (جنسیت یا محاورات و ضرب الامثال)، 5 (دامد و جمع)، 5 (اضداد) اور 3 (تعریضات) 18 = نمبر کے سوالات پوچھے جائیں گے۔
- (۴) مضمون نویسی کے لیے 08 نمبر مخصوص ہوگا۔ اسی طرح خط نویسی یا درخواست نویسی کے لیے بھی 8 نمبر مخصوص ہوں گے۔
- (۵) کسی موضوع کے تعلق سے ایک مختصر پیرا گراف لکھنے کے لیے 6 نمبر مخصوص ہوں گے۔ کسی غیر نصابی متن (Unseen) پر 06 نمبر کے معروضی سوالات پوچھے جائیں گے۔
- (۶) کسی غیر نصابی متن (Unseen) میں نثر یا نظم کے اقتباسات پیش کر کے ان کی تشریح کرائی جائے گی۔ اس کے لیے 06 نمبر مخصوص ہوں گے۔
- (۷) ہر سوال کے لیے متعدد متبادل سوالات (کم از کم چار) ضرور دیئے جائیں گے۔
- (۸) گیارہویں جماعت میں ۲۰ فی صد نمبر زبانی امتحان کے لیے مخصوص ہوگا۔ جہاں تقریر کی صلاحیت، قواعد، شعریہ اور مہارت زبانی کو بنیاد بنایا جائے۔ ہر حصے میں ۵۰ فی صد نمبر مخصوص ہوں گے۔

ENGLISH LANGUAGE



1. INTRODUCTION :

Language, the chief function of which is communication, is the most distinctive trait of human society. The very acquisition of knowledge depends on language. Language is a marker of our identity and is closely associated with power in society. We can hardly do without language in any walk of life.

The knowledge of English is especially very important in the age of globalization we are living in. The richness of this language and the existing stock of wide knowledge in English make it immensely useful. It is a window on the world and an access to the growing store of knowledge in science, technology and humanities.

We have to acknowledge, whether we like it or not, that English plays an important role in the domains of education, administration, business and political relations, judiciary, industry etc and is, therefore, a passport to social mobility, higher education and better job opportunities.

The mushroom growth of so called 'English medium' or public schools in every nook and corner of the state and the people's preference to such schools is a testimony to the growing importance and need of English which has to be addressed in the curriculum / syllabus of the state. The very principle of equality entails that English should not remain associated only with the rich, elite or the upper middle class. Even a rural child of the underprivileged has an equal right to gain a sufficiently good level of proficiency in it so that he should not suffer discrimination for lack of it.

With the changes in the aims and objectives of education, redesigning curricular framework and thereof revision of syllabus becomes a compulsion. This compulsion is the positive strength of a live education system. Unfortunately, this has not been the case with these education system in Bihar. The last revision took place about 13 years ago and hardly any significant attempt was made in the these years to update the syllabus according to the needs and requirements of the learners or the society.

Even the last revision that took place 13 years ago lacked in a very essential element, i.e., socio-economic, cultural, political context or what can be termed as 'Bihari input'. It was exclusively based on the recommendations of the NEP 1986.

The neglect of 'Bihari input' in the syllabus has very unhappy consequences. The learners failed to find any substantial link between the life around them and what was being taught in the classroom. Rote learning thus got hold over understanding.

The guidelines of NCF 2005 framed in the light of the well known report "Learning without Burden" has shifted the focus from the teachers to the learners, confining the former to the role of facilitator only. The NCF 2005 recognises learners as the constructor of knowledge and sees multilingualism as a strength in the classroom. It prescribes five guiding principles. These include / imply :

- 1 Connecting knowledge to life outside the school.
- 1 Ensuring that learning be shifted away from rote methods.
- 1 Enriching the curriculum to provide for over all development of the child rather than remain textbook centric, and
- 1 Making examinations more flexible and integrated with classroom life.
- 1 Nurturing identify of the learners within democratic policy.

The change in attitude to teaching and learning necessitates the revision of the State Curriculum Framework and thereof the syllabus of English language. It is high time we recognised the importance of creating socio-cultural contexts that would encourage children to participate actively in understanding and create appropriate communicative practices. The Bihari inputs and the appropriate use of mother-tongue in the classroom will accelerate the pace of learning and thus can help the learners overcome their fear of English. It's time we removed the notion that English is difficult to learn.

The present syllabus owes much to the NCF 2005 and the NCERT syllabus developed in the light of NCF 2005. The attempt has been to accommodate the NCERT syllabus as far as practicable in the context of Bihar. This has entailed, to some extent, the omission, modification and even shifting of many of the learning objectives, learning strategies and learning outcomes to another class.

It is important to state that, unlike the NCERT syllabus which is only stage wise, the proposed state syllabus is developed both stage-wise and class-wise.

Special emphasis has been laid on oral drilling and building vocabulary of the learners at the primary stage. It appears necessary as the children in the state are mostly of rural background and they lack the



अंग्रेजी

exposure to English language or English vocabulary at the initial stage. The children who follow the NCERT syllabus are mostly from urban background and hence they have exposure to English or at least they pick up a fairly large number of English words even before they come to schools. Hence, the NCERT syllabi for Class I and II can expect their children to develop ability to 'enact small plays / skits' and 'talk' about themselves, members of the family and the people in their surroundings' but this will be too ambitious an objective for the children with rural background and with little or no exposure to English language and its vocabulary.

Methods and techniques of teaching have been dealt with in details for classes I-II. However, for the rest of the classes this has been done stage-wise rather than class-wise. Attempts have also been made to correlate learning outcomes with the learning objectives at every stage. The NCERT syllabus has been of great help in this connection.

Attention has also been paid to integrate contemporary issues with the core-components, prescribed in the National Education Policy and academically accommodate them in the light of the local needs and specialities. This aims at improving the state syllabus knowledge-wise and objective-wise.

The proposed syllabus also recognises the availability of actual time for the classes as an important component of syllabus designing. This has an important bearing on the selection of content materials quantitatively so that the syllabus does not exert any unnecessary pressure on the learners.

The learning of grammar has been visualised as the process of discovery of English usages. Hence, more emphasis has been given on the learning of the functions of the words than on their grammatical terminology. It is hoped that this will enable the learners use structures and vocabulary appropriately in different contexts and social situations both orally and in writing.

A very significant feature of the proposed syllabus is that the continuity of linkage has been maintained at each successive level of learning from class I to class XII. The emphasis has been to ensure the integrated communicative competence by the time the learner passes the +2 level. It is for this reason that the syllabus recommends measures to assess and evaluate the oral proficiency as well.

The proposed syllabus also recommends a curricular package on the pattern of NCERT. The package consists of a textbook, a workbook and 1-3 supplementary readers depending on the levels.

2. Linguistic, Social and Cultural Features of Bihar :

Bihar presents a complex picture in terms of socio-political and multilingual educational conditions. The urban population, here, is barely 10% of the total population. The remaining 90% have rural background. Agriculture continues to be the mainstay of the state's economy, though there is a note of emphasis on shifting to industries to enrich the existing economy with a view to getting rid of educational backwardness.

However, notwithstanding the illiteracy and socially underdeveloped condition of the people of Bihar, English is widely in demand as a subject of learning in schools. The mushroom growth of so-called English medium schools even in the remote corners of the state is a testimony of the growing demand for English which the state must address to.

Linguistically, Bihar is a rich composite of several local dialects / languages that serve as mother tongue in different regions. These dialects / languages include Bhojpuri, Maithili, Bajjika, Bengali, Magahi, Angika and Urdu besides Hindi which is the medium of instruction in the government schools. The linguistic regions of Bihar are like distinctive cultural regions. Bihar is very rich in the stories and verses that have no recorded version as yet, but they are living on the tongues of the people. Along with these stories and verses, the folk art forms are both culture preserving and culture transmitting. The cross currents of various cultures transmitted through various languages are very strong and together they make the rich cultural heritage of the state.

3. The status of English in India :

English in India is the most powerful medium of official proceedings and files. It serves as the link languages in the multi-lingual context of the Indian society and the medium of instruction in the higher education and even in the primary and secondary education as far as public schools are concerned. The status of English as a medium of instruction can be understood from the fact that the English version of the NCERT books on any subjects are more in demand than their Hindi version or for that matter their editions in any other Indian languages.

English is the exclusive choice in the library related activities. The cataloguing and all other activities related to libraries are done in English. In other words, English is the medium of accessibility to libraries.

English enjoys a very respectable place in the business circle. Accountancy and auditing depend heavily on this language. In fact, it is the language of international relations, management, commerce, trade and

industry as well. Internet, that has become so popular today and has shrunk the entire universe into a small unit, uses English as its medium of operation. The operation of Internet, or for that matter computer, is very difficult without the knowledge of English.

Moreover, Indian novelists, critics, and intellectuals belonging to various fields are creating valuable literature in English. The English knowing sections of the Indian society not only have power and prestige but also have become the opinion makers at the socio-political and cultural levels. There is a great need to learn and teach English to our younger generations because apart from its various usage, English also function as an integrating force at the intellectual level.

4. The status of English in Bihar :

English had been the language of education and administration in Bihar during the British days. After Independence, even though it was made a non-compulsory subject at school level, English did not lose its importance. It continued to enjoy prestige and power at the social and administrative levels. However, a bias against English also prevailed among the average students especially with rural background that "English is a tough subject". The decision did help the students pass examinations without English but they felt handicapped when they went for higher or technical education.

It is high time we correct the 'mistake' and incorporated English in the State Syllabus as a compulsory subject. This will be an incentive to the learning of this language. Teaching of English in Bihar has also to keep in mind that ***English for an average Bihar is L₃ ; Hindi or Urdu is L₂ and languages like Bhojpuri, Maithili, Bengali, Magahi, Angika and Bajjika etc are L₁.*** This multilingualism is both strength and a hindrance. It helps the learning of English but it also brings some specific problem that regards as pronunciation of certain words and the uses of certain structures. Attempts have been made in the proposed syllabus to redress the hindrances and use multilingualism as a positive help.

5. Language and language learning objectives :

Language is used for a variety of purposes ranging from daily discourse to the acquisition of knowledge and power. Even the introspection that helps us define and refine our thoughts depends chiefly on language. How else can we clarify our thoughts if we do not learn to talk to ourselves ? In a nutshell, we need language for our qualitative existence.

The ever-expanding horizon of knowledge and the globalisation of society necessitated the need of a language that can be used as a link language globally. Needless to say that in the present context English is the only language that serves this purpose. English serves as a link language also in the multilingual Indian society. In other words, **English brings unity in diversity.**

Learning of language, here English, however, is different from learning subjects like History, Geography or Physics etc. Unlike the content subjects, skill – subjects like English deserve different treatment. Here, **the objective is not to impart information or knowledge but to develop effective communicative competence that again depends on the development of four skills namely listening, speaking, reading and writing.**

The learners must also be equipped with such politeness and powers of persuasion that they are able to negotiate all communicative situations with tolerance and dignity. The development of linguistic proficiency in the learner is needed for the spontaneous and appropriate use of language in different situations. Such a development of linguistic proficiency depends heavily on fostering certain skills as mentioned under the subhead **"The skills to be stressed upon and taught"**.

6. English language learning problems :

The first and the foremost problem that comes in the way of English language learning is the preconceived bias that English is very difficult to learn and even more difficult is to secure pass-marks in it. This bias against English is very common even among the teachers for the simple reason that the majority of teachers themselves are not very competent to handle English language classes. This adversely affects the learning process.

To overcome the learner's 'fear' of English language it is important to produce textbooks that are contextually rich and provide incentive to the innate curiosity and creativity of the learners. Textbooks of English should be designed in such a way that they enhance children's awareness of their immediate surroundings. The use of the languages of the learners may turn out to be most productive for teaching English. Attempts should be made to **exploit multilingualism as a teaching strategy in the classroom.** Urdu, Hindi, Bhojpuri, Maithili, Magahi, Angika, Bajjika, Bengali etc. could be rich teaching resources.

This will help them arrive at linguistically significant generalizations and overcome their 'fear' of the language.

A practical solution to the teacher's unpreparedness to the task of teaching could be the **preparation of teacher's handbook or manual, spelling out methods and techniques to teach specific teaching items.** The appropriate notes for teachers in the textbook itself would also be of great practical value.

The learners with rural background are not very familiar with English words. Their vocabulary is very poor even at the Secondary and the Intermediate levels. Hence, special attention has to be given to build their vocabulary from the very beginning.

It is futile to teach isolated grammatical items to students as this isolated teaching does not generate interest among the learners; it rather appals them. Hence, attempts should be made to ensure that the knowledge of Grammar emerges from an active engagement in communicative practices : the examples of different structures should be given at each stage in a graded order in order to help them develop mechanism to digest and practise it.

7. Attitudes to be nurtured :

Language learning depends heavily on the attitudes and motivation of learners and teachers. To ensure the positive motivation and involvement of the learners in the teaching-learning processes, it is important that the teacher is positively inclined towards pupils of diverse linguistic, ethnic and socio-cultural backgrounds. It is high time the teachers appreciated the fact that **all languages represented in their multilingual classroom are equally scientific and should receive equal respect from the teacher and the taught. Besides, languages flourish in each other's company.** The global standing of English owes much to the extensive borrowings it has made from and the intensive interactions it has had with almost all the languages in the world.

The use of multilingual classroom as a resource can also help in reducing the anxiety levels of learners. It can also help in raising their awareness levels of self-respect, self discipline, respect and care for others, interdependence and cooperation. Last but not the least is the basic attitude to teach and learn so that both the teachers and the learners can grow together. That will also help in promoting admiration for all cultures and all languages. Such an attitude will certainly have an impact on the personality of the teachers and the learners so that they can grow together to make all expressions in language not only cultured but also humane.

8. Content and Material :

The proposed syllabus emphasises on the integration of the ten core-components identified in the National Policy of Education. Since all contemporary concerns and issues cannot be included in the syllabus of a single class, attempts should be made to select and grade these contents and materials keeping in view the age and level of the learners. Some emerging concerns like environmental issues, conservation of resources, population concerns, disaster management, forestry, animals and plants, human rights, safety norms and sustainable development need to be suitably incorporated in the course content. There is also a felt-need of incorporating the issues emanating from them. They are detailed hereunder :

- * Self, family, home, friends and pets.
- * Neighbourhood and community at large.
- * The nation-diversity (socio-cultural, religious and ethnic as well as linguistics), heritage (myths, legends / folk tales).
- * The world : India's neighbours and other countries (their cultures, literature and customs)
- * Adventure and imagination.
- * Sports
- * Issues relating adolescence.
- * Science and Technology
- * Peace and Harmony
- * Travel and Tourism
- * Mass media : Print Media, Electronic Media
- * Art and Culture : Local heritage, Folk-literature, Folk-arts, Local History.
- * Health and reproductive health.

The syllabus also emphasises the use of appropriate language for different purposes and functions; for example, greetings, classroom situations, home situation, street scene, bazaar, marketing, shopping, business, sports, games etc. which can be expressed through simple dialogues. All structures, patterns, immediate

contexts, situations and vocabulary to be used for them need to be selected and graded in view of the age group, level, simplicity and frequency. The should be established through examples and reinforced through drill, practice as well as repetitions. **Care has to be taken not to mention any structure or grammatical item in particular while teaching the young learners so that the learning of grammar and students may be incidental.**

9. Continuity for linkage at different levels :

Continuity for linkage at different levels reflects the vision of the teaching plan. It gives a definite direction to teaching learning process in the light of the objectives laid down in the curriculum framework. Continuity helps the learners achieve basic linguistic proficiency without exerting any extra pressure on them. Their progression is guided and purposive. Needless to say that the lack of continuity proves very taxing on the learners who find themselves grouping in want of a graded and guided progression.

It would be in the interest of the learners if the syllabi from class I to Class-XII are prepared with the continuity for linkage from one stage to another.

10. The skills to be stressed upon and taught :

Listening, Speaking, Reading and Writing are interrelated. One skill cannot be developed without developing the other. One cannot read correctly unless one knows how to speak well. **Speech is the language.** So, pronunciation should be given priority. It can be taught by a teacher by pronouncing word correctly. Some sounds of English don't exist in Hindi or regional languages or mother tongues. Those areas of weaknesses and difficulties have to be kept in mind by the teacher while encouraging classroom interactions and participation.

The development of linguistic proficiency in the learner is needed for the spontaneous and appropriate use of language in different situations. Such a development of linguistic proficiency depends heavily on fostering certain skills as mentioned below :

- * The learner should acquire the ability to listen and understand, and should be able to employ non-verbal clues (signs, gestures etc) to make connections and draw inferences.
- * The learner should develop the habit of reading for information and pleasure; draw inferences and relate texts to previous knowledge; read critically and develop the confidence to ask and answer questions.
- * The learners should be able to employ her communicative skills, with a range of styles, and engage in a discussion in an analytical and creative manner.
- * The learner should be able to identify a topic, organise and structure thoughts, and write with a sense of purpose and an awareness of audience.
- * The learner should be able to understand and use a variety of 'Registers' associated with domains such as music, sports, films, gardening, construction work, etc.
- * The learner should be able to use a dictionary and other materials available to the library and elsewhere, access and collect information through making and taking down notes, etc.
- * The learner should be able to use language creatively and imaginatively in text transaction and performance of activities.
- * The learner should be able to develop sensitivity towards their culture and heritage, aspects of contemporary life and languages in and around the classroom.
- * The learner should be able to refine his literary sensibility and enrich his aesthetic life through different literary genres.
- * The learner should be able to appreciate similarities and differences across languages in a multilingual classroom and society.
- * It is important for the learner to notice that different languages and language varieties are associated with different domains and communicative encounters.
- * The learner should become sensitive to the inherent variability that characterises language and notice that languages keep changing all the time. It is possible for a student to notice the differences between her own speech and the speech of her, say, grandparents.

11. The role of a teacher : What to be taught and how ?

The role of a teacher is to reduce his indispensability to the minimum and motivate self-learning by provoking students into putting questions, discussing, role playing and concretisation of abstract ideas through a real life situation and audio-visual aids. Hearing take place effectively if two or more senses are simultaneously employed; one hears, sees, understands and internalises through inference, judgement, drawing

conclusion, and making comparison and contrast.

What is to be taught is the language used in daily life-like situation. It is not divorced from life. One way to ensure this is to select themes/sub-themes in conformity with the learner's immediate environment – physical, social and cultural. These should lead to an understanding and practice of the values enshrined in the constitution of India, including the Fundamental Rights and Duties.

Language learning is best facilitated in input-rich communicative environments. Inputs include textbooks, learner-chosen texts, class libraries, parallel books and materials in more than one language, media-support (learner magazines / news papers column, radio/audio cassettes), and authentic materials. The importance of textbooks remains indubitable. However, in addition to textual materials, various other inputs such as cards, charts, advertisements, texts produced by children, brochures, pamphlets, radio, T.V. News, etc. should also be brought into the language classroom.

English spelling is not always based on its sounds; it is not spoken as it is written. But Hindi is spoken as it is written. So, English sounds have to be taught repeatedly.

The structure of 'Question' is more difficult than that of a 'Statement'. Articles 'a', 'an', 'the' are more difficult than other determiners – 'my', 'your', 'his', 'one'. So first begin with such determiners and then come to Articles 'a', 'an' and 'the' – First 'a', then 'an', and then 'the'. A teacher must keep in mind what structure and pattern of English has no equivalence in the students' mother tongues. Such structures should be taught through repeated exposure. **Exposure should be given through drill and practice.**

12. Stages of learning :

To ensure proper progression of learning, four stages of learning have been envisaged. These stages are : Primary, Upper-Primary, Secondary and Intermediate or +2. The syllabus has been developed both stage-wise and class-wise. The objectives and learning outcomes are given stage-wise but teaching units with specific objectives have been given class-wise.

13. Curricular package :

It is recommended that the curricular package for each class except for the primary stage (classes- I-V) will consist of a textbook, a workbook and a supplementary reader. The textbook should contain 6-8 comprehensive units (lessons, exercises and activities) and 4-6 poems of varying lengths depending on the class. The workbook will have the same number of corresponding worksheets as the number of the comprehensive units of the textbook. The supplementary reader will have about 6-12 pieces meant essentially for self-study promoting reading for information and pleasure.

The learning materials require to be developed keeping in view the different classes so that the learning is '**without any burden on the learners**' of the concerned classes. In other words, the quality content and the number of lessons should not appear taxing on them.

The Textbook and the Supplementary Reader will contain Bihar specific issues and topics in abundance. About 50% of the space will be given to the works of other languages used widely in Bihar. The standard translation will be preferred for this purpose.

The recommended weightage in terms of marks is 40% for the textbook, 40% for language work including oral testing and 20% for the supplementary reader.

14. Time available :

The ideal number of periods for one class is 180. However, due to various compulsions, the number of periods available in the schools and colleges of the state for actual teaching is not more than 150 periods though the number of working days may be over 220 days. The size of the curricular package should be such as can be conveniently covered in the given time.

15. Evaluation :

Evaluation will be an ongoing and continuous process. Ongoing evaluation becomes meaningful only when teachers and learners, both, are ready to take responsibility for their own progress not paying much attention to external benchmarks (real or imaginary, immediate or ultimate). This entails deeper understanding on the part of the teachers to be able to perceive and appreciate subtle changes in children's language learning and proficiency. This also entails a deep understanding on the part of the learners process because learning process is individual and self-regulatory.

Evaluation depends heavily on **how** and **how much**. Experiences tell that learners participate in evaluations with more comfort when the experience is not always a failure and the outcomes can be seen as a legitimate and appropriate way towards the next step in learning.

Evaluations gain in meaningfulness when the children are clear about the immediate role played by

current evaluation methods within the learning process. Continuous evaluation has to facilitate and guide teaching by determining the learner's current stage of development or attainment, in order to identify her **"zone of proximal development"**.

For this, the teacher of English is expected to keep individual records of the learners and note down periodically the progress made by individual learners. He/she should also note down the problematic areas of each learner. This will help him plan remedial teaching.

In ultimate analysis, the purpose of evaluation should be an exercise towards 'the discovery of a learner' so that his / her creativity and originality can find an exposure for his / her much needed recognition and appreciation. **Such a 'learner' should appear as 'face in the crowd' instead of being a face lost in the crowd.** This, however, does not, in any sense, mean ignoring the average.

TESTING SPEAKING

The natural progress in speech, whether it is mother tongue or the second language, is from a one word, mostly nouns, stage to the production of multi-word sentences with verbs, auxiliaries, determiners, adjectives and prepositions, via a two-word stage.

It has been observed that children from rigidly taught classrooms remain inarticulate, or produce single words, mostly nouns, in response to the pictures shown to elicit responses. To observe their progress from this stage to longer utterances should be the task of the continuous evaluation. The teachers can do well by entering the progress of the individual child either in his diary or separate portfolio for each child. At later stages, speaking can be analysed into sub skills for testing.

TESTING READING

Cards can be arranged according to the graded levels of difficulty for monitoring progress. Teachers can do well by first assessing some sub-skills as follows :

- (a) **Reading aloud :** The pace of reading and the level of accuracy increase with the increase in the learner's proficiency. The gradual progress has to be observed.
- (b) **Scanning a text :** (a list, a telephone directory, advertisement etc.) for information.
- (c) **Reading for given information :** (factual comprehension)
- (d) **Reading for inference**
- (e) **Extended reading.**

TESTING : WRITING AND LISTENING

The testing of writing and listening can similarly be broken up into sub-skills. This sort of testing can be complemented by integrated language test (beginning with the cloze test, for example)

A sub-skill approach may help the teacher find out that particular students have particular strengths. For example, extroverted, articulate speakers may not be very interested in or good at an introverted, private activity like reading. The teacher can identify areas of strength as well as areas where help is needed.

SUMMATIVE EVALUATION

Summative evaluation will do well by moving away from being achievement-oriented as is the case today and become proficiency-oriented. Attempts have to be made not to test the mastery of studied passages, but rather to use the language appropriately in new contexts, in :

- Reading age-appropriate materials.
- Listening to and understand age-appropriate material.
- Conversing on age-appropriate topics.
- Writing on age-appropriate topics.
- Control over receptive vocabulary.
- Control over expressive vocabulary.

THE OVERALL PATTERN OF EVALUATION

Besides summative evaluation at the end of the session or class, which would carry 40% weightage of marks, there could be two term/formal evaluations carrying 30% weightage; these should form the part of ongoing continuous assessment. Each evaluation should comprise both oral and written test. At level 1, 70% weightage should be given to oral test. The other components of ongoing continuous evaluation would be the assignments – both home assignments and class assignments and the ongoing continuous evaluation, made in

every class or at the end of every unit : both these could be given 20% weightage each. Thus the break-up of marks (except for level 1) could be as follows :

Sl. No.	Evaluation	Marks	Written	Spoken
1.	Continuous Assessment	60	31	29
(a)	1 st Term evaluation :	15	08	07
(b)	2 nd Term evaluation :	15	08	07
(c)	Ongoing class / unit evaluation :	20	10	10
(d)	Assignments :	10	05	05
2.	Final Term evaluation :	40	20	20
Total		100	51	49

Background :

For a large number of students, the higher secondary stage is a preparation for the university, where a fairly high degree of proficiency in English may be required. But for another large group, the higher secondary stage is a preparation for entry into the world of work. Hence, the course will cater to both groups by promoting the language skills required for academic study as well as language skills required for the workplace. Since the learners are expected to have acquired a reasonable degree of language proficiency in English by the time they come to class XI, the primary concern at the +2 level is to promote the higher – order language skills both written and spoken in an integrated manner.

Learning Objectives :

The **general objectives** at this stage are :

- 1 To develop greater confidence and proficiency in the use of language skills – Listening, Speaking, Reading and Writing – necessary for social and academic purposes.
- 1 To develop ability to comprehend the standard books in English in his own special subjects.
- 1 To participate in group-discussions/interviews, making short oral presentations on given topics.
- 1 To listen to and comprehend live as well as recorded oral presentations on a variety of topics.
- 1 To build communicative competence in various 'Registers' of English.
- 1 To perceive the over-all meaning and organisation of the text (i.e., the relationship of the different 'chunks' in the text).
- 1 To identify the central/main point and supporting details, etc.
- 1 To promote advanced language skills with an aim to develop the skills of reasoning, drawing inferences, etc. through meaningful activities.
- 1 To translate texts from mother tongue(s) into English and vice versa.
- 1 To develop ability and knowledge required in order to engage oneself in independent reflection and enquiry.
- 1 To develop sense of Language through a variety of prose specimens providing good models of contemporary English.
- 1 To develop the ability to comprehend and appreciate simple poems in English.

Language items :

The course would draw upon the language items suggested for classes IX-X and delve deeper into their usage and functions. Particular attention may, however, be given to the following areas of grammar :

- 1 The uses of different tense-forms for different kinds of narration (e.g. media commentaries, reports, programmes, etc.)

- 1 The use of passive forms in scientific and innovative writings.
- 1 Converting one kind of sentence / clause into a different kind of structure as well as other items to exemplify stylistic variations in different discourses.
- 1 Modal auxiliaries – uses based on semantic considerations.

The study of formal (descriptive) grammar, at a very elementary level, will be introduced in class XI. The workbook for the course will contain suitable exercises on grammar as well as basic phonology. A conscious knowledge of some grammatical rules and sound patterns may be useful and interesting at this stage.

Learning Strategies :

The teaching at this stage would follow a multi-skill, learner-centred, activity-based approach, of which there can be many variations. To promote habits of self-learning and reduce dependence on teacher, silent reading of prescribed / selected texts for comprehension would be encouraged as the classroom activity along with other forms of language learning activities such as role play, dramatisation, group discussion, writing, etc. (although many such activities could be carried out without the preliminary use of textual materials). It is important that students be trained to read independently and intelligently, interacting actively with texts, with the use of reference materials (dictionaries, thesauruses, etc.) where necessary. Some pre-reading activity will generally be required, and the course book should suggest suitable activities, leaving teachers free to devise other activities when desired. So also, the reading of texts should be followed by post reading activities. It is important to remember that every text can generate different interpretations. Students should be encouraged to interpret texts in different ways.

Group and pair activities can be restored to when desired, but many useful language activities can be carried out individually.

In general, teachers should encourage students to interact actively with texts and with each other. Oral activity (group discussion, etc) should be encouraged.

Learning outcomes :

At the end of this stage, learners will be able to :

- 1 Understand and respond to lectures, speeches, etc.
- 1 Do text-based writing (i.e., writing in responses to questions or tasks based on prescribed or unseen texts).
- 1 Read and comprehend extended texts (prescribed and non-prescribed) in the following genres : fiction, science fiction, drama, poetry, biography, autobiography, travel, sports, literature etc.
- 1 Write expository / argumentative essays of 250-300 words, explaining or developing a topic, arguing a case, etc.
- 1 Write formal / informal letters and applications for different purposes.
- 1 Write items related to the workplace (minutes, memoranda, notices, summaries, reports, filling up of forms, preparing CVs, e-mail messages, etc.)
- 1 Taking / making notes from reference materials, recorded talks etc.
- 1 Develop the capacity to appreciate literary use of English and also use English creatively and imaginatively.
- 1 Enjoy and appreciate different types of prose pieces and poems.

Required Teaching Competence :

- 1 The teacher should be able to encourage students to interact actively with texts and with one another.
- 1 The teacher should have the competence to show the learners that there could be various interpretations of a given text and encourage them to interpret texts in different ways.
- 1 This entails that the teacher should have the competence to fulfil the functional (communicative), literary (aesthetic) and cultural (sociological) needs of the learners.
- 1 The teacher should also have fluency and accuracy in speaking and writing.
- 1 The teacher should have the competence to devise and conduct various activities related to the text.
- 1 The teacher should have a sound knowledge of the functional grammar, literature and phonological features of English.
- 1 The teacher should be able to encourage critical and analytical thinking on the part of the learners.
- 1 The teacher should have the competence to build meaningful environment to elicit responses from the learners.

- 1 The teacher should have the ability to initiate learners to group activities and role play.
- 1 The teacher should be good at role play, dramatisation, discussion, debate etc.
- 1 The teacher should have the competence to handle audio-visual aids.
- 1 The teacher should have the clarity of concepts regarding the process of writing.
- 1 The teacher should have the competence to devise suitable language games and hold language activities for a long time.
- 1 The teacher should have the competence to reduce his indispensability and encourage learners to become the facilitator of learning but at the same time he should also have the ability to plan and devise his teaching methods according to the need of the learners.

Suggestions for the selection of textual materials

- 1 Contents and vocabulary should be related to life and other subjects like science, social sciences environmental science etc.
- 1 Attention should be paid to meet the linguistic needs of the child to use English in various social contexts.
- 1 There should also be a meaningful correlation between the teaching of other languages and English.
- 1 Representative pieces on the suggested topics should have sufficient Bihar inputs. Rajgir, Nalanda, Ashoka' Stoopas, Pawapuri, Bodhivriksha at Gaya are some of the topics which could be included.
- 1 Genuine Bihari writers in English or good texts on Bihar should be included with priority in the textbook.
- 1 Standard translation from different regional languages /mother-tongues should be given 50% space in the supplementary reader.
- 1 Attempts should be made to integrate different skills on a given topic.
- 1 The textbook should pinpoint the test to the given and suggest activities at the end of every lesson.
- 1 The cultural context should be taken into consideration in which value education and the guidelines of preambles of Indian constitution should be suitably incorporated. Among other things, constitutional principles need to be included, especially the philosophy of the preamble and the values implied in the chapter on the fundamental rights and the fundamental duties.
- 1 Folk tales / fables / legend / local history should adequately be included.
- 1 Adequate emphasis should be laid on the actual use of language in a variety of ways.
- 1 With a view to achieving the objectives laid down in the syllabus textbook and workbook are required to be made for enhancing the levels of learners' competence and performance in English in the light of the syllabus prescribed for the purpose.

@





Syllabus : Class–XI

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
1.	Live / Recorded presentation on variety of topics.	Oral-written exercises	Develop Listening, Speaking and comprehension skills.	Audio records should be accompanied with the text prints to enable the teachers to read out of there is no audio aids.
2.	Group discussions on familiar topics / contemporary issues	Oral exercises	Developing Argumentative and Speaking skills.	Examples : Familiar topic : "Can literature help us win bread and butter ?" Contemporary issue : "Is death sentence violation of human rights ?"
3.	Preparing notes and writign summary of a given passage	Writing exercises	Identifying central / main point and supporting details etc. and perceiving overall meaning and organisation.	The texts should deal with socio-political and cultural issues along with the principles enshrined in the constitution.
4.	Comprehension of unseen factual / imaginative passages (Short and long question-answer items)	Reading with understanding and Writing exercises	Developing the skills of reasoning, drawing inferences.
5.	Reading of tales / short stories / short plays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding and imbibing virtues.	Bihari writers, Indian writers, Commonwealth writers and native writers of English



Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Remarks / Textual support
6.	Reading of informative pieces / essays	Reading with understanding and Writing exercises	Read with understanding and respond effectively in writing.	On Environment, Economics, Sports, Science, Health and Hygiene. Adolescence, Human values and Human rights, Cultural diversity and unity etc.
7.	Reading poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values and / or encountering truth.	World fame poets (both native and non native poets of English), Indian poets, Bihari Poets.
8.	Free Composition on familiar / contemporary issues	Writing exercises	Communicative skills in writing	Notices, memorandum, formal and informal letters, application etc.
9.	Various registers of English	Oral / written exercises	Build communicative competences in various registers of English.	Support with standard pieces of writing.
10.	Translation from mother tongue into English	Writing exercises	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Wide ranging topics covering different aspects of life including great personalities.
11.	Grammatical items and structures : (a) The use of different Tense forms for different kinds of narration	Oral and Writing exercises	Listening, Speaking, Reading and Writing skills.	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to text.



Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Remarks / Textual support
	(e.g. media commentaries, reports, programmes, etc.) (b) Reported speech in extended texts. (c) The use of Passive forms in scientific and innovative writing. (d) Converting one kind of sentence / clause into a different kind of structures as well as other items to exemplify stylistic variations in different discourses. (e) Modal auxiliaries – Uses based on semantic considerations. (f) Phrases and idioms (g) Analysis.			

Syllabus : Class–XII

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
1.	Live / Recorded presentation on variety of topics.	Oral-written exercises	Develop Listening, Speaking and comprehension skills.	Audio records should be accompanied with the text prints to enable the teachers to read out of there is no audio aids.
2.	Group discussions on familiar topics / contemporary issues	Oral exercises	Developing Argumentative and Speaking skills.	Examples : Familiar topic : "Can"
3.	Precis of a given passage	Writing exercises	Identifying central / main point and supporting details etc. and perceiving overall meaning and organisation.	Informative pieces on contemporary burning issues.
4.	Comprehension of unseen imaginative passages / graph / chart / table (Short and long question-answer items)	Reading with understanding and Writing exercises	Developing the skills of reasoning, drawing inferences.	The texts should deal with socio-political and cultural issues along with the principles enshrined in the constitution.
5.	Reading of tales / short stories / short plays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding and imbibing virtues.	Indian writers, Bihar writers, common wealth writers, native and other non-native writers of English.



Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
6.	Reading of informative pieces / essays	Reading and Writing exercises	Reading with understanding and acquiring general knowledge of practical value	On Reproductive health, Art and culture, Mass media, Travel and tourism, Peace and harmony etc.
7.	Reading poems for enjoyment and understanding	Oral and Written exercises	Enjoying and understanding poems and imbibing human values and / or encountering truth.	Bihari poets, Indian poets, Commonwealth poets, native and other non-native English poets.
8.	Free Composition on familiar / contemporary issues	Writing exercises	Communicative skills in writing	R e p o r t s , message, CVs, e-mail, formal and informal.
9.	Various registers of English (contd.)	Oral / written exercises	Build communicative competences in various registers of English.	Support with standard pieces of writing.
10.	Translation from mother tongue into English	Written	Ability to translate from mother tongue into English and vice versa.	Informative and inspiring pieces.
11.	Grammatical items and structures : (a) The use of different Tense forms for different kinds of narration (e.g. media commentaries, reports, programmes, etc.)	Oral and Writing exercises	L i s t e n i n g , S p e a k i n g , Reading and Writing skills.	Sufficient examples followed by extensive exercises based on or related to text.

Sl. No.	Teaching Items	Method	Objective	Resources / Textual support
	(b) Reported speech in extended texts. (c) The use of Passive forms in scientific and innovative writing. (d) Converting one kind of sentence / clause into a different kind of structures as well as other items to exemplify stylistic variations in different discourses. (e) Modal auxiliaries – Uses based on semantic considerations. (f) Phrases and idioms (g) Synthesis.			



संस्कृत



1. प्रस्तावना—

1.1 गौरवशाली अतीत

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है। विश्व का सर्वाधिक प्राचीन साहित्य ऋग्वेद भी संस्कृत भाषा में ही है। चारों वेद, वेदांग, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र जैसे गौरवशाली ग्रंथों की अविच्छिन्न, सुनियोजित श्रृंखला इसी भाषा में है। इस भाषा के इन प्राचीन ग्रंथों एवं अन्य शास्त्रों में गणित, रसायन, भौतिकी, चिकित्सा विज्ञान, संगीत एवं नृत्य विद्या जैसे वैज्ञानिक ज्ञानों के साथ-साथ साहित्य की विविध विधा नाटक, गद्य-पद्य लेखन आदि के बीज देखे जा सकते हैं। भारत एक अधिकांश यूरोपीय भाषा की जननी संस्कृत सृष्टि के आदि काल से ही अपने ज्ञान-विज्ञानमयी श्रोतों से मानव-सभ्यता को अनुप्राणित करती रही है।

1.2 संस्कृत शिक्षण की आवश्यकता

आज का विश्व विकास के पंख पर सवार होकर भी अशांति, अवसाद एवं आतंक के साये में जी रहा है। संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों में निहित पर्यावरण के संतुलन का पाठ, नैतिक शिक्षा, नारी सम्मान की अवधारणा, सर्वधर्मसमन्वय की उन्नत भावना, जैसे- जीवनोपयोगी तत्त्व मानव को इनसे मुक्ति दिला सकते हैं। अन्यान्य परवर्ती भाषाओं की जननी होने के कारण इस भाषा के अध्ययन से परवर्ती भाषाओं का कोष बढ़ता है तथा भाषागत एवं साहित्यगत संतुलन व संवर्द्धन भी हो सकता है। आज यज्ञों की वैज्ञानिकता प्रमाणित है। जाहिर है, इन यज्ञों के शुद्ध एवं सम्यक् संचालन हेतु संस्कृत शिक्षण अनिवार्य है। इसी प्रकार योग, वास्तु, चिकित्सा जैसे अनेक विज्ञान को बलवती बनाने के लिए भी संस्कृत शिक्षण अनिवार्य है।

1.3 संस्कृत : अर्थकरी विद्या

भूमण्डलीकरण के इस दौर में व्यवसाय शब्द की प्रासंगिकता बढ़ गयी है। संस्कृत अध्ययन से भी व्यवसाय अर्थात् जीविकोपार्जन प्रदान करने की अपेक्षा बढ़ गयी है। जीवनदायिनी इस संस्कृत विद्या में भी जीविका की असमी संभावनाएँ हैं। आज तो पश्चिम के चतुर लोगों द्वारा इस विद्या के अनेक गूढ़ तत्व 'हाइजैक' किए जा रहे हैं। वास्तुविद्या, योग, चिकित्सा के सूक्ष्म तत्व, पर्यावरण-संरक्षण, पशु-धन संरक्षण जैसी अनेक विद्याएँ जीविका की अपार संभावनाओं के द्वार खोल सकती हैं। दवा-निर्माण के क्षेत्र में भी संस्कृत भाषा में निबद्ध 'भाव प्रकाश' जैसी रचनाओं का अध्ययन रोजगार की नयी संभावनाओं को आयाम दे सकता है। यज्ञ, पूजन की प्रासंगिकता भी वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक— दोनों दृष्टियों से सिद्ध है। आज सेना जैसे महत्वपूर्ण जगहों में भी इस निमित्त इसी विषय के विद्वानों की नियुक्ति 'धार्मिक शिक्षक' के पद की जाती है। पौरोहित्य कार्य के लिए विदेशों में संस्कृत विद्वानों की माँग रोजगार के दरवाजे खोलते प्रतीत होते हैं। इसी प्रकार प्राचीन संस्कृत के चिकित्सा ग्रंथोंकेआधारपर'Herbal plant' कीखेतीकरआर्थिकसम्पन्नताएवंरोजगारपैदाकिएजासकतेहैं।इसप्रकारइसभाषाकेसागोपांग अध्ययन से धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष— इन चतुर्वर्गों की प्राप्ति की जा सकती है।

1.4 संस्कृत की वैज्ञानिकता

संस्कृत की अपार शब्दनिधि विश्व का अनुपम उदाहरण है। संस्कृत के एक धातु से डेढ़ लाख शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जबकि कुछ प्रसिद्ध भाषाओं में भी इतने शब्द नहीं मिलते। इस भाषा की शब्द व्युत्पादन की वैज्ञानिक विधि द्वारा शब्द या पद के सूक्ष्मतम स्वरूप तक पहुंच सकते हैं। किसी भी भाषा के कौशल हेतु श्रवण, वाचन, लेखन एवं भाषण दक्षता को विकसित करना आवश्यक है। प्राचीन मनीषियों ने इसी पक्ष को दृष्टिगत कर वेदांग साहित्यों— शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द एवं ज्योतिष का विधान किया है। बाद में आचार्य पाणिनी ने संस्कृत व्याकरण को एक संतुलित एवं पूर्ण कलेवर प्रदान कर इस भाषा को पूर्णतः वैज्ञानिक ही बना दिया। नए शोधों से यह बात भी प्रमाणित हो गयी है कि संस्कृत भाषा आधुनिकता की नींव मानी जानेवाली 'कम्प्यूटर-प्रणाली' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। संस्कृत के विभिन्न आयुर्वेद ग्रंथों— चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि तथा उपनिषद् जैसे अनेकानेक संस्कृत भाषा के ग्रंथों पर निरंतर जारी शोध इस भाषा की वैज्ञानिकता को ही तो बयों करता है। योगाचार्य रामदेव ने संस्कृत के 'पातञ्जलसूत्र' के प्राणायाम एवं योग सूत्रों को जन-जन तक पहुंचाकर वैज्ञानिक क्रांति का ही सूत्रपात किया है।

2. बिहार में संस्कृत की प्राचीन परम्परा—

बिहार का अतीत संस्कृत के समृद्ध एवं सुनहले दिनों से पूर्ण रहा है। याज्ञवल्क्य, जनक जैसे आत्मद्रष्टा ज्ञानी, वराहमिहिर, आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ व खगोलविज्ञानी, भारती-मण्डन जैसे प्रगल्भ दार्शनिक, चाणक्य जैसे कूटनीतिज्ञ, पतञ्जलि जैसा वैयाकरण, विद्यापति जैसे कवि इस माटी में संस्कृत की सौंधी सुगंध को बिखेरते नजर आते हैं। संस्कृत के इसी गौरवशाली अतीत का प्रमाण है कि उत्तर बिहार के किसी-किसी गाँव में पक्षी तक संस्कृत श्लोकों का धाराप्रवाह उच्चारण करते थे। दर्शन की अनेक शाखाएँ बिहार की इसी गण्डकी-कोशी-गंगा की तराईयों में पल्लवित-पुष्पित हुईं।

3. वर्तमान चुनौतियाँ एवं संस्कृत-शिक्षण—

3.1 पर्यावरण

आज पर्यावरण संकट एक महामारी का रूप धारण करता जा रहा है। विकास की अंधीदौड़ ने पर्यावरण को इस कदर संक्रमित कर रखा है कि विकास के सारे आयाम ही बड़ेमानी प्रतीत होने लगे हैं। ओजोन परत का संकट, अम्ल-वर्षा, असमय आते आंधी-तूफान, सुनामी, प्रलयकारी बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि जैसी पर्यावरणिक परेशानियाँ प्रतिदिन पैदा हो रही हैं। संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों द्वारा पर्यावरण के प्रति प्रेम का पाठ पढ़ाकर इन परेशानियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। विश्व का आदिम साहित्य— ऋग्वेद, प्राकृतिक तत्वों की न केवल भूरि-भूरि प्रशंसा करता है बल्कि स्थापित विविध वैज्ञानिक प्रतिमानों की दैवीय रूप में स्तुति कर इन 'पंचभूतों' की उपादेयता

को भी बताता है। संस्कृत साहित्य के अन्यान्य दर्शनों में भी प्रकृति, जीव एवं जगत के त्रिक को स्थापित कर इन तीनों के समन्वय की बात कहकर पर्यावरण संरक्षण का उपाय ही प्रस्तुत किया गया है। उल्लेखनीय है कि बाहरी पर्यावरण के साथ भीतरी पर्यावरण की स्वच्छता और संतुलन आवश्यक है। संस्कृत भाषा में निबद्ध विभिन्न ग्रंथ भीतरी पर्यावरण को भी नियंत्रित करते हैं।

3.2 लिंग भेदभाव

लिंग भेदभाव आज के विकासशील राष्ट्रों की आम समस्या है। दहेज-प्रताड़ना, नारी स्वास्थ्य, दोहरा मानदंड जैसी अनेक कुदृष्टियाँ इन राष्ट्रों की आधी जनसंख्या को प्रभावित कर विकास के सारे मानदंडों को गड़बड़ा कर रख देती हैं। संस्कृत भाषा के प्रायः सभी ग्रंथ नारी समानता, स्मिता व सम्मान के उत्स को दर्शाते हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसे वैदिक सूक्त नारी के आदर्शतम रूपों का बखान कर लिंग समानता को ही प्रदर्शित करते हैं।

3.3 दलित चेतना

भारत जैसे विकासशील देश की बहुत-बड़ी समस्या जाति-प्रथा में जकड़ा समाज है। 'सम गच्छध्वं, सम् वर्धध्वं, सम वो मनांसि जानताम' (साथ चलें, साथ बढ़ें और साथ-साथ सोंचें) जैसी वैदिक ऋचा समन्वय एवं सहकार के सहारे चलकर आगे बढ़नेवाली मानव जाति की बात करती हैं। 'जन्मना आयेते शूद्रः, कर्मणा द्विज इति' जैसे वेद वाक्य तो जातीय व्यवस्था को नकारते हुए कर्मवादी समाज के आदर्श को ही प्रतिध्वनित करते हैं।

3.4 शांति

आज हर समाज, राज्य व राष्ट्र आतंक, अनुशासनहीनता, नैराश्य जैसे अशांति तत्वों से दो-दो हाथ कर रहा है। संस्कृत भाषा में निबद्ध 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' जैसे सर्व कल्याण की सोच वाला श्लोक हर स्तर पर शांति की कामना कर एक समृद्ध व शांति समाज, राज्य, राष्ट्र व विश्व की कल्पना को ही तो प्रतिरूपित करता है। इतना ही नहीं संस्कृत के कतिपय मंत्र पृथ्वी, ग्रह, जल, जीव, जगत्— सभी की शांति की बात कर शांतिपूर्ण जीवन के वजूद को स्थापित करता है।

अस्तु, संस्कृत के इन आदर्शों को प्राथमिक स्तर से उच्चतर स्तर तक संस्कृत शिक्षण में समन्वित कर मानव निर्मित सामाजिक, बुराईयों एवं प्रकृति के साथ छेड़छाड़ पर नियंत्रण तो पायी ही जा सकती है, साथ ही आज के अशांति के वातावरण में संस्कृत के इन-इन आदर्शों का अध्ययन विश्व शांति की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित हो सकता है।

4. संस्कृत पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख मार्गदर्शक बिन्दु—

NCF-05

केआलोकमेंबिहारप्रदेशकेलिएपाठ्यचर्याकीरूपरेखा,2006मेंनिहितमूलतत्त्वोंकोआत्मसात्करनेकाप्रयासकरते

हुए भाषा शिक्षण के अंतर्गत संस्कृत भाषा की पाठ्यचर्या का निर्माण निम्न तथ्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया है—

1. ग्रामीण एवं विद्यालयीय परिवेश केन्द्रित
1. मनोरंजनपूर्ण स्मरण (कण्ठस्थ) प्रणाली पर बल
1. मानव-मूल्य एवं सर्वधर्म-समभाव
1. पर्यावरण एवं मानवाधिकार
1. बिहार की आंचलिक भाषा एवं संस्कृत
1. सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समृद्धि, दलित चेतना एवं लिंगीय समानता
1. मूल्यांकन

5. बिहार में संस्कृत शिक्षण में बहुभाषिकता—

प्रायः प्रदेशों में एक भाषा बोली जाती है, जैसे— बंगाल में बंगला, उड़ीसा में उड़ीया, महाराष्ट्र में मराठी आदि। परन्तु बिहार प्रदेश में तो इस क्षेत्र में भी 'अनेकता में एकता' का नायाब नमूना पेश करता है। बिहार में हिन्दी भाषा के अतिरिक्त मैथिली, अंगिका, भोजपुरी, मगही, वज्जिका जैसी अनेकानेक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत शिक्षण के क्रम में क्षेत्र विशेष की भाषा के माध्यम से भी अध्यापन संस्कृत भाषा के अध्ययन को सरल, सुगम एवं तार्किक बना सकता है। उल्लेखनीय है कि यह पद्धति अन्य भाषाओं के शिक्षण के क्रम में भी उपादेय हो सकती है।

बहुभाषिक शिक्षण हेतु अन्य भाषाओं की पाठ्य-पुस्तकों की विशिष्ट रचना को परस्पर सम्मिलित कर भाषा के साथ भाव-सेतु का कार्य किया जा सकता है।

6. संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य—

उद्देश्य :	उच्चमाध्यमिक(XI – XII)
सामान्य :	<ol style="list-style-type: none"> 1. संस्कृत की विविध विधाओं से विद्यार्थी को परिचित कराना। 1. अपने विचारों को संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना। 1. संस्कृत ग्रंथों में उपलब्ध जीवनोपयोगी ज्ञान भण्डार से विद्यार्थियों का परिचय कराना। 1. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय मनीषियों के मौलिक चिंतन एवं उनके विशिष्ट योगदान से छात्रों का परिचय कराना।

उद्देश्य :	उच्चमाध्यमिक(XI – XII)
सामान्य :	<ol style="list-style-type: none"> किशोरावस्था में होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों के प्रति चेतना जागृत करना। पर्यावरण, मानवाधिकार, मानव मूल्यों एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाना। सामाजिक न्याय एवं समाज के दलित वर्गों के प्रति सम्मान का भाव जागृत करना। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास करना।
विशिष्ट :	<ol style="list-style-type: none"> संस्कृत के सरल पाठ्यांशों को सुनकर तथा अभिनय को देखकर अर्थग्रहण के साथ रसास्वादन की क्षमता का विकास करना। संस्कृत पद्यांशों का शुद्ध उच्चारण लघु, गुरु एवं यति के अनुरूप सस्वर पाठ करने की क्षमता उत्पन्न करना। संकलित नाट्यांशों का अभिनयपूर्ण वाचन करना। विभिन्न समसामायिक गतिविधियों पर आधारित संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के अंशों को पढ़कर अर्थबोध की क्षमता का विकास करना। पठितांशों के भावार्थ लिखने की क्षमता का विकास करना। किशोरावस्था की शारीरिक विकृतियों के प्रति सजगता हेतु नाटक एवं संवाद पर आधारित पाठों का समायोजन करना। पर्यावरण, स्वास्थ्य, मानवाधिकार एवं मानवमूल्यों से संबंधित पाठ समायोजित कर किशोरावस्था के विद्यार्थियों में सजगता उत्पन्न करना। बिन्दु 6 : उद्देश्य के विशिष्ट उद्देश्य के संदर्भ में बच्चों में संस्कृत बोलने तथा जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु '10 दिवसीय संस्कृत सम्भाषण शिविर' का आयोजन प्रति तीन माह पर किया जाय। बिन्दु 6 : उद्देश्य के विशिष्ट उद्देश्य के संदर्भ में शिक्षक द्वारा वर्ग में ही नाटक, नाटिका या नाट्यांश का प्रतिमाह मञ्चन छात्र/छात्राओं द्वारा करवाया जाय। साथ ही साथ अन्त में संस्कृत शिक्षक बच्चों अशुद्धियों से अवगत कराते हुए उनका परिमार्जन करें।



7. पाठ्यक्रम-

कक्षा	भाषिक तत्व क्षमता/तात्त्विक तत्व क्षमता	पाठ आधारित व्याकरण
XI	<ol style="list-style-type: none"> महत्वपूर्ण धातुओं के परस्मैपदी रूप पाँचों लकारों में तथा सेव्, लभ्, वृत् जन् एवं रूच् का आत्मनेपदी में ज्ञान। संस्कृत में वाक्य रचना का ज्ञान। किशोरावस्था की सामाजिक बुराईयों के निवारण संबंधी ज्ञान। 	<ol style="list-style-type: none"> राष्ट्रीय चेतना एवं शांति की भावना का विकास।
XII	<ol style="list-style-type: none"> सभी समास भेदों का सामान्य परिचय। प्रमुख कृत्, तद्धित एवं स्त्री प्रत्यय का ज्ञान। वाच्य परिवर्तन का ज्ञान। कारकों एवं उपपदों का नियमानुसार वाक्य प्रयोग का ज्ञान। सप्रसंग व्याख्या का ज्ञान। कार्यालयीय पत्र व्यवहार का ज्ञान + कार्यालयीय व अन्य पत्र लेखन प्रकार। अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं समझ का विकास। समाज के हर तबके के प्रति सहिष्णुता की भावना का विकास। 	<ol style="list-style-type: none"> पाठ्यपुस्तक आधारित सन्धि

8. शिक्षण विधि एवं तकनीक-

संस्कृत शिक्षण को सुगम, रोचक एवं छात्र केन्द्रित बनाने के लिए अध्यापक आवश्यकतानुसार प्रश्नोत्तर विधि, अभिनय-विधि को अपनाते हुए छात्रों के परिवेश एवं उनकी मातृभाषा का संस्कृत शिक्षण में संयोजन कर सकते हैं।

पुनः स्तरानुसार क्रियात्मक विधि का अधिकाधिक उपयोग कर भाषा कौशल के विकास का प्रयास किया जाय। अध्यापकों द्वारा संस्कृत के श्लोकों का सस्वर पाठ करते हुए छात्रों द्वारा अनुवाचन कराया जाय।

संस्कृत की विशिष्ट ध्वनियों का मनोरंजनपूर्ण अभ्यास भी भाषा, कौशल के विकास में उपयोगी हो सकता है। अध्यापक द्वारा प्रायोगिक व्याकरण का प्रयोग भी अभ्यास द्वारा सिखाया जाय।

अध्यापक बच्चों से विभिन्न पठित अंशों को दो-चार गुटों में बाँटकर शास्त्रार्थ करवा सकते हैं।

8.1 विद्यालय/कक्षा क्रियाकलाप एवं टी0 एल0 एम0

- 1 क्रीड़ापरक गतिविधियाँ का आयोजन।
- 1 संस्कृत अनुलेख/श्रुतिलेख।
- 1 प्रार्थना में गुरु/ईश वंदना विषयक कम से कम दो श्लोकों का प्रयोग।
- 1 प्रत्येक कक्षा में प्रति माह श्लोकोच्चारण, अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन।
- 1 सेमिनार, अभ्यास वर्ग का समायोजन।
- 1 प्रत्येक विद्यालय में क्षेत्रीय महापुरुषों की तिथियों पर संस्कृत में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- 1 विविध विषयों पर आधारित शास्त्रार्थ।
- 1 संस्कृत के रोचक कथाओं, नाटकों एवं अन्य समसामयिक संदर्भों पर निर्मित संस्कृत के कार्टून फिल्मों या कथाचित्रों को दिखलाना।
- 1 कैसेट, वीडियो, कम्प्यूटर गेम आदि।

9. मूल्यांकन एवं प्रविधि-

संस्कृत शिक्षण के अन्तर्गत सतत् मूल्यांकन आवश्यक है। तभी उद्देश्यानु रूप भाषा कौशल का विकास किया जा सकता है। अस्तु, संस्कृत अध्यापक संस्कृत पाठ्यक्रम को साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक कैलेंडर बनाकर संस्कृत ध्वनियों, वर्णों, श्लोकों के पठन, वाचन एवं लेखन का सतत् मूल्यांकन कर सकते हैं। सेमिनार एवं अभ्यास वर्ग भी मूल्यांकन में सहायक हो सकते हैं।

9.1 मौखिक परीक्षा

- 1 कक्षा-XI एवं XII में 40 अंक
- 1 इससे छात्रों के संस्कृत श्रवण, वाचन, भाषण एवं स्मरण कौशलादि का मूल्यांकन हो सकेगा।

10. मूल्यांकन-

प्रथम इकाई परीक्षा-	मौखिक -	20
	प्रायोजना -	20
	गृहकार्य -	20
	लिखित -	40
		100
द्वितीय इकाई परीक्षा-	मौखिक -	20
	प्रायोजना -	20
	गृहकार्य -	20
	लिखित -	40
		100
अर्द्धवार्षिक परीक्षा-	मौखिक -	20
	लिखित -	80
		100
वार्षिक परीक्षा-	मौखिक -	20
	लिखित -	80
		100

11. सम्भावित प्रायोजनाकार्य-

कक्षा-XIth

1. संस्कृत के किन्हीं दो महाकवियों के व्यक्तित्व पर संस्कृत में 20 पंक्तियों का लेख।
2. संस्कृत के किन्हीं दो नाटककारों के व्यक्तित्व पर संस्कृत में 20 पंक्तियों का लेख।
3. संस्कृत के किन्हीं दो गद्यकारों के व्यक्तित्व पर संस्कृत 20 पंक्तियों का लेख।
4. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों में से किन्हीं 04 छन्दों का सोदाहरण लक्षण लेखन।
5. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त अलंकारों में से किन्हीं 04 अलंकारों का सोदाहरण लक्षण लेखन।
6. पर्यावरण को प्रदूषित करनेवाले विभिन्न घटकों पर 20 पंक्तियों का परिचयात्मक निबंध।
7. पर्यावरण संरक्षण से संबंधित 20 पंक्तियों का परिचयात्मक निबंध।
8. संस्कृत के परिचित शब्दों से शब्दकोश निर्माण।
9. शब्द-सूची चित्र की सहायता से 5 लघु कथा-लेखन
+ 7 शिक्षकों का त्रैमासिक जिला स्तरीय 'विमर्श' सम्मेलन
+ 8 विद्यालय-स्तरीय मासिक संस्कृत निबंध, कथादि प्रतियोगिता का आयोजन।

कक्षा-XIIth

1. संस्कृत के किन्हीं 4 नाटककारों के व्यक्तित्व पर संस्कृत में 20 पंक्तियों का लेख।
2. संस्कृत के किन्हीं 4 गद्यकारों के व्यक्तित्व पर 20 पंक्तियों का संस्कृत में लेख।
3. संस्कृत के किन्हीं 4 महाकवियों के व्यक्तित्व पर संस्कृत में 20 पंक्तियों का लेख।
4. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त होनेवाले छन्दों में से किन्हीं 08 का सोदाहरण लक्षण लेखन।
5. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त होनेवाले अलंकारों में से किन्हीं 08 का सोदाहरण लक्षण लेखन।
6. संस्कृत से परिचित शब्दों का शब्दकोश निर्माण।

12. पाठ्यपुस्तक की रूपरेखा-

कक्षा-XIth

पुस्तक भाग-

1. स्वप्नवासवदत्तम् प्रथमसेतृतीयअंक
2. अपरीक्षितकारक ब्राह्मणी-नकुल कथा सिंहकारक मूर्ख ब्राह्मण कथा मत्स्य मण्डूक कथा हासभी शृगाल कथा
3. रघुवंश प्रथम वर्ग के प्रथम 10 श्लोक
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास गद्य काव्य, महाकाव्य एवं नाटक का उद्भव एवं विकास, रामायण

व्याकरण-

1. माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण
2. वर्णों के उच्चारण स्थान
3. अकारान्त पुं, स्त्री शब्दरूप, धातुरूप
4. संधि
5. गण परिचय
6. लकार
7. कृदन्त, तद्धित, स्त्री प्रत्यय
8. समास का सामान्य ज्ञान
9. वाच्य परिवर्तन
10. पत्र-व्यवहार (कार्यालयीय एवं व्यक्तिगत)
11. निबन्ध लेखन
12. अनुवाद

कक्षा-XIIth

पुस्तक भाग-

1. स्वप्नवासवदत्तम् चतुर्थ से षष्ठाङ्क
2. गीता, द्वितीय अध्याय (श्लोक 13 से 25) शिवि जातक बोधितत्त्व
3. नीतिशतक (श्लोक 1 से 21) मुञ्जस्य राज्यारोहणम् भोजस्य उद्धारः
4. वाल्मीकि रामायण रामस्तुति
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास गीतिकाव्य, चम्पूकाव्य, स्तोत्रकाव्य, उपजीव्य काव्य, महाभारत

व्याकरण-

1. कक्षा-XI के व्याकरण विषयक अंशों का पूर्वाभ्यास

13. स्तरान्त अधिगम क्षमता-

वर्ग-XI-XIIth

1. संस्कृत की विविध विद्याओं का ज्ञान।
1. व्याकरण के समस्त आधारभूत तत्वों का ज्ञान।
1. संस्कृत में निबन्ध लेखन।
1. संस्कृत शब्दकोष निर्माण का ज्ञान।
1. काव्य-रसास्वादन।
1. कार्यालयीय पत्र-व्यवहार का ज्ञान।

14. संस्कृत शिक्षक से अपेक्षाएँ-

1. संस्कृत श्लोकों के सस्वरवाचन का ज्ञान।
1. बहुभाषिकता का ज्ञान।
1. दृश्य, श्रव्य, यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग करने की क्षमता।
1. गेयता एवं अभिनेयता।
1. संस्कृत व्याकरण का समुचित ज्ञान।
1. संस्कृत सम्भाषण में कुशलता।
1. छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने की क्षमता।
1. संस्कृत इतिहास में निपुणता।



15. संभावित प्रश्न-पत्र की रूपरेखा (स्तरवार) लिखित परीक्षा-

संस्कृत (सम्प्रवर्णनाधारितम्)

कक्षा-XI तथा XIIth

पूर्णांक-40 समय- 1½ घंटे

अपठित-अवबोधनम्

इकाई परीक्षा

1. एक पद में उत्तर देना।
2. एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना।
3. भाषिक प्रश्न-
 - (i) विशेष्य-विशेषण संबंध
 - (ii) कर्ता-क्रिया अन्विति
 - (iii) विपर्यय-पर्याय शब्दों की पहचान
 - (iv) संज्ञा-सर्वनाम प्रयोग
 - (v) वाच्य की पहचान
4. अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक देना।
5. अव्ययपद की पहचान।
6. विभक्ति की पहचान।
7. लकार की पहचान।

रचनात्मक कार्यम्

1. पत्र-लेखन (कार्यालयीय)
2. चित्र वर्णन
3. अनुच्छेद/निबंध लेखन
4. वार्तालाप क्रम में रिक्त स्थानों की पूर्ति।
5. नाट्यशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों की परिभाषा (लक्षण)।

अनुप्रयुक्त व्याकरणम्

1. समास
2. उपसर्ग
3. प्रत्यय (तद्धित, कृदन्त, स्त्री प्रत्यय)
4. संज्ञा/सर्वनाम शब्दरूप
5. धातुरूप (पापी लकारों में)- आत्मनेपदी/परस्मैपदी
6. संख्यावाची शब्दरूप
7. संधि/संयोग
8. संधि-विच्छेद
9. वर्णों का उच्चारण स्थान
10. वाच्य-परिवर्तन
11. प्रत्याहार निर्माण

पठित-अवबोधनम्

गद्यांश आधारित-

- | | |
|---------------------------------|--|
| (i) एक पद में उत्तर देना | (ii) एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना |
| (iii) विभक्ति/लिंग/वचन की पहचान | (iv) प्रत्यय (कृदन्त, तद्धित, स्त्री प्रत्यय) की पहचान |
| (v) सप्रसंग व्याख्या | |

पद्यांश आधारित-

- | | |
|-----------------------------|------------------------------------|
| (i) एक पद में उत्तर देना | (ii) एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना |
| (iii) विशेष्य-विशेषण प्रयोग | (iv) अन्वय |
| (v) सप्रसंग व्याख्या | |

नाट्यांश आधारित-

- | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|
| (i) एक पद में उत्तर देना | (ii) एक पूर्ण वाक्य में उत्तर देना |
| (iii) विभक्ति/उपपद विभक्ति/कारक पहचान | |





বাংলা কা पाठ्यक्रम

বাংলা

শ্রেণী – XI – XII

ভূমিকা (Introduction)

মাধ্যমিক স্তর পেরিয়ে শিক্ষার্থী উচ্চ মাধ্যমিক স্তরে উত্তীর্ণ হয়েছে। পূর্ব পাঠের মাধ্যমে সে কেবল বাংলা ভাষায় দক্ষতা অর্জন করাই নয়, সাহিত্যের আগ্রহ তৈরি ও তার প্রবেশ ঘটেছে। মাতৃভাষার মধ্য দিয়েই সাহিত্য, শিল্প, বিজ্ঞান চেতনায় মৌলিকতা লিখিত ও মৌখিক রূপে ব্যক্ত করতে শিখেছে।

উচ্চ মাধ্যমিক স্তরে এসে শিক্ষার্থী তার লব্ধ জ্ঞানের পরিধিকে আরও বিস্তৃত করে তোলে এবং মাতৃভাষার মাধ্যমে দৈনন্দিন জীবনে সাধারণের সঙ্গে সহজেই সংযোগ স্থাপন করতে পারে।

এই পাঠ্যক্রম মাতৃভাষায় উচ্চ শিক্ষা লাভে সহায়ক। অপরপক্ষে উচ্চ মাধ্যমিক স্তরের পর শিক্ষার্থী তার ভবিষ্যৎ জীবনের কর্মসূচি রূপায়ণে সচেষ্ট হয়। অধ্যাপনা, স্বাস্থ্যের মাধ্যম, পর্যটন (Tourism) ইত্যাদি বিভিন্ন কর্মক্ষেত্রে নিজেকে সুপ্রতিষ্ঠিত করতে এই পাঠ্যক্রম সহায়ক হবে।

এই পাঠ্যক্রমের মাধ্যমে জগতের অন্যতম শ্রেষ্ঠ ভাষা ও সাহিত্যের সঙ্গে আরও নিবিড় (I-XII) पाठ्यक्रम-2007-09
ও সুদৃঢ় সম্পর্ক গড়ে উঠবে।

সুনাগরিক হওয়ার যোগ্যতা অর্জন করবে।





শ্রেণি — XI — XII

পাঠ্যসূচি (Content of Syllabus)

পাঠ্যসূচি কেমন হওয়া উচিত এ প্রসঙ্গে রবীন্দ্রনাথ বলেছেন, সৃজনশীলতা আর উদার আনন্দ হল শৈশবের চাবিকাঠি। কিন্তু বয়স্কদের দুনিয়া তাকে বিচ্ছিন্ন করতে চায়। পাঠ্যসূচি এমন হওয়া উচিত যার দ্বারা দেশ নির্মাণের কাজ সুসম্পন্ন হয় এবং শিক্ষাকে সঠিকভাবে উপস্থাপন করা যায়। ভারতের মত একটি বড় দেশে, যেখানে বিভিন্ন ধর্ম, ভাষা, সংস্কৃতি সেরব্বম দেশে পাঠ্যসূচি হওয়া উচিত এমন, যার সাহায্যে শিক্ষার্থী নিম্নলিখিত বিষয়গুলির সঙ্গে পরিচিত হতে পারে :—

1. ধর্মনিরপেক্ষতা
2. সাম্য
3. পারস্পরিক মৈত্রী
4. গণতান্ত্রিক পদ্ধতিতে বিশ্বাস
5. ইতিহাস সচেতনতা এবং স্বদেশপ্রেম। এছাড়া ভাষা ও সাহিত্যের পঠন-পাঠনে শিক্ষার্থীর ভাব বিনিময়ের নিপুণতা যাতে বৃদ্ধি পায়, সে সম্পর্কে অবশ্যই লক্ষ্য রাখতে হবে।
6. লক্ষ্য রাখতে হবে, যাতে জ্ঞানলাভের সঙ্গে সঙ্গে শিক্ষার্থী আনন্দ লাভও করতে পারে।
7. পাঠ্যপুস্তকে এমন বিষয়বস্তু দিতে হবে যাতে শিক্ষার্থী স্থানীয় বিষয়বস্তু, স্থানীয় সাহিত্য ও সংস্কৃতি সম্বন্ধে জ্ঞান লাভ করতে পারে।
8. মনীষীদের সম্বন্ধে যত বেশি জানা যাবে, শিক্ষার্থীর সামনে ততই জীবনের আদর্শ সম্পর্কে ধারণা স্পষ্ট হবে – যা ভবিষ্যতে তাদের জীবন চর্চায় সাহায্য করবে।
9. মাতৃভাষার মাধ্যমে ভাষা শিক্ষা করলে শিক্ষা বিশেষভাবে সহজ সরল হবে। এছাড়া





বাংলা

পাঠ্য সামগ্রী
ঐচ্ছিক বাংলা— শ্রেণি - XI
(Elective Bengali)

সময় — 3 ঘন্টা

Time - 3 Hrs

বাংলা সাহিত্যের ইতিহাস (চতুর্দশ থেকে অষ্টাদশ শতাব্দী পর্যন্ত)

গদ্য — 5 x 2 = 10

- | | | |
|---------|---|----------------------------|
| আমার মন | — | বঙ্কিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় |
| বিলতে | — | রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর |
| আরণ্যক | — | বিহুতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় |

(দাবরু পান্না বীরবর্মার অংশটি)

কবিতা — 5 x 2 = 10

- | | | |
|-----------------|---|-------------------|
| অনুরাগ | — | চণ্ডীদাস |
| ওরা কাজ করে | — | রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর |
| কাতারী ঘুনিয়ার | — | কাজী নজরুল ইসলাম |

নাটক — 5 x 2 = 10

- | | | |
|------------|---|-------|
| বিদ্যাসাগর | — | বনফুল |
|------------|---|-------|

মিক(XI-XII) পাঠ্যক্রম-2007-09





বাংলা

	Materials (পাঠ্য সামগ্রী)	50 Marks
সময় — দেড় ঘণ্টা		বারংলার জন্য
গদ্য —		10
	জীবনস্মৃতি — রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর (শিকারস্তু, ঐকর্ষবাবু, ঘর ও বাহির) অথবা 'ছেলেবেলা'	
অথবা কবিতা —		
	জন্মভূমি — মহাকেল মখসুদন দত্ত দুই বিঘা জমি — রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর দুইটি সত্যবাণী — জীবনানন্দ দাশ	
সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন	গদ্য অথবা পদ্য থেকে আলাদা আলাদা —	15
ব্যাকরণঃ	এক কথায় প্রকাশ — যুগ্ম শব্দ	5
	কারক, বিভক্তি, সন্ধি, সমাস —	10

-XII) পাঠ্যক্রম-2007-09

বাংলা





বাংলা

শ্রেণি - XII
(পাঠ্য সামগ্রী)
ঐচ্ছিক বাংলা

সময় — 3 ঘণ্টা

Full Marks – 100

1। ছোটগল্প — পোস্টমাস্টার — রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর —	15
মাতৃহীন - প্রভাত কুমার মুখোপাধ্যায়	
নিমগ্নাচ্ছ - বনফুল	
চরণদাস এম.এল.এ - সতীনাথ ভাদুড়ী	
2। বাংলা সাহিত্যের ইতিহাস	
উনবিংশ ও বিংশ শতাব্দী কল্লোল যুগ পর্যন্ত —	10
3। শ্রীকান্ত (প্রথমভাগ) — শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় —	20
বড় প্রশ্ন + ছোট প্রশ্ন + ব্যাখ্যা (8 + 8 + 4)	
4। অনুশীলনী (Exercise Comprehension) —	10
5। ভাষাতত্ত্ব - ভাষা, উপভাষা, মিশ্রভাষা, অপভাষা —	10
6। ব্যাকরণ - উপসর্গ, অনুসর্গ —	5
7। পরিভাষা (ইংরেজী থেকে বাংলা) —	5
8। আবেদন পত্র (অফিস সংক্রান্ত) —	5
9। সাহিত্য সম্পর্কিত জিজ্ঞাসা (পাঠ্য বিষয়ের অন্তর্গত) —	20

I-XII) পাঠ্যক্রম-2007-09

বাংলা





শ্রেণি – XI – XII
(মাতৃভাষায় শিক্ষালাভের সুফল)

মাধ্যমিক ও উচ্চ - মাধ্যমিক স্তরে মাতৃভাষা পাঠের - সুনির্দিষ্ট উদ্দেশ্য হোল :-

1. শুদ্ধ ও স্পষ্ট উচ্চারণ কালে অর্থ ও ভাবসঙ্গতি বজায় রেখে নির্ভুল স্বরভঙ্গিতে পদ্য ও গদ্য রচনা পাঠ করার সামর্থ্য অর্জন।
2. স্বাধীন ও স্বচ্ছন্দময় মাতৃভাষায় - মনোভাব প্রকাশ ও কোনো বিষয় সম্পর্কে আলোচনা করার সামর্থ্য অর্জন।
3. পাঠ ও শ্রবণের সঙ্গে সঙ্গে বোধ ও অবধানের সামর্থ্য অর্জন।
4. নীরব পাঠের দ্বারা অর্থবোধের সামর্থ্য অর্জন।
5. স্পষ্ট, সুন্দর হস্তাক্ষরে ম্লভ লিখতে পারার দক্ষতা অর্জন।
6. সহজ, সাবলীল ও সুন্দর ভাষায় প্রতিদিনের অভিজ্ঞতা ও আবেগ অনুভূতি লিখে প্রকাশ করার ক্ষমতা।
7. মাতৃভাষার মূলগঠন, ব্যাকরণের - মূলরীতি ও বাগবিধির সঙ্গে ভাব আদান প্রদানের দক্ষতা অর্জন।
8. সাহিত্য পাঠে শিক্ষার্থীদের আগ্রহের উদ্দীপনা ও সাহিত্য অভিব্যক্ত বিষয় উপলব্ধিতে সামর্থ্য অর্জন।
9. যে কোন আলোচনার ক্ষেত্রে আত্মবিশ্বাসের সঙ্গে ভাবের ও আদান- প্রদানের সামর্থ্য অর্জন।

(लङ्कानन्द 1 र लङ्कानन्द 4)





- (ক) শূন্যস্থান পূর্ণ করা।
- (খ) সংক্ষিপ্ত উত্তর ভিত্তিক।
- (গ) বিকল্প উত্তর ভিত্তিক।
- (ঘ) উত্তর বাছাই করার প্রশ্ন।
- (ঙ) অর্থ অনুসারে শব্দ মেলানো।
- (চ) সংক্ষিপ্ত উত্তর ভিত্তিক মূল্যায়ন।

সমগ্র বিষয়টির উপর ছোট ছোট উত্তর ভিত্তিক প্রশ্ন থাকে।

- (৪) মিশ্র উত্তর ভিত্তিক মূল্যায়ন - লিখিত পরীক্ষায় কিছু রচনাভিত্তিক, কিছু সংক্ষিপ্ততম উত্তর ভিত্তিক এবং যথেষ্ট সংক্ষিপ্ত উত্তর ভিত্তিক প্রশ্ন পত্র থাকা প্রয়োজন। প্রশ্নের ভাষা হবে সহজ।
- (৫) মৌখিক পরীক্ষার জন্য নির্দিষ্ট পরিমাণ সময় নির্ধারিত থাকে। এর মধ্যে থেকে মূল্যায়নের উপর জোর দিতে হয়। এর মধ্য দিয়ে শিক্ষার্থীর উপস্থিত বুদ্ধি, স্মৃতিশক্তি উপস্থাপন ক্ষমতা শব্দ প্রয়োগ দক্ষতা সম্পর্কে মূল্যায়ন করা যায়।

আজকের পরীক্ষা পদ্ধতিকে আপাতত ত্রুটিপূর্ণ বলে মনে হলেও বিতিয়ে দেখলে দেখা যাবে যে কোন বিষয়ে শিক্ষার্থীর বৌদ্ধিক বিকাশের ধারাকে আমরা শুধুমাত্র পরীক্ষার মাধ্যমেই গ্রহণযোগ্য রূপে ভুলে ধরতে পারি।

Syllabus of Arabic For Class : XI & XII

عربی زبان دنیا کی ان اہم ترین زبانوں میں سے ایک ہے جس کو بین الاقوامی سطح پر بولی اور سمجھی جانے والی دنیا کی دوسری سب سے بڑی زبان کا درجہ حاصل ہے۔ ہندوستان کے حوالہ سے اس زبان کی اہمیت یہ ہے کہ اہل ہند اس زبان سے اس وقت سے آشنا ہیں جب کہ عرب ہند تعلقات کی نوعیت محض تجارتی سطح کی تھی۔ لیکن جب اس زبان نے ہندوستان میں اپنا گھر بنا لیا تو تہذیب و ثقافت کے لین دین میں یہ ایک دوسرے سے اس قدر قریب ہوئی کہ علم و سائنس اور ادب و تہذیب کا ایسا گراں قدر سرمایہ وجود پذیر ہوا جس نے ہندوستان کو دنیا کی دوسری اقوام سے قریب کرنے کا بیڑا اہم کارنامہ انجام دیا۔ مردِ ایام کے ساتھ علم اور قدرتی سائنس کے ایسے ذخیرے عربی میں سمٹ آئے جس سے انسانی ترقی اور تہذیب و ثقافت کے انتشار میں بڑی مدد ملی۔ عربی زبان ہندوستان کی دوسری زبانوں کے ساتھ تعامل کے عمل سے گزر کر اس قدر وسیع اور شہر آور ہو گئی کہ یہ زبان قومی یکجہتی اور تہذیبی ہم آہنگی کی علامت بن گئی۔

ہندوستان میں عربی زبان کی تدریس کو کئی جہتوں سے بہت اہمیت حاصل ہے۔ ایک تو یہ کہ خود ہندوستانی تہذیب کے ارتقائی مراحل کی تاریخ اس میں پوشیدہ ہے۔ طباعت و اشاعت کے اس جدید دور میں بھی عربی زبان میں علم و سائنس کے ایسے ذخیرے منظر عام پر آنے سے محروم ہیں جو سائنس، انجینئرنگ، میڈیسن اور دیگر علوم کے لیے بنیادی ماخذ کا درجہ رکھتی ہیں۔ ظاہر ہے اگر اس زبان کے پڑھنے والے نہ رہیں تو اس میں موجود علوم کے ذخیروں سے دنیا محروم رہ جائے گی جو بہر حال عالمی خسارہ کے مترادف ہوگا۔

معاصر زمانہ میں عربی زبان کا تعلق روزگار سے جڑ جانے کے بعد اس کی تدریس کی ضرورت مزید دو بارہا ہو گئی ہے۔ ایک طرف جہاں ہندوستان کے تعلقات عربی ممالک کے ساتھ مسلسل ترقی پذیر ہیں اور تجارتی و دوسرے معاملات سے متعلق معاہدے دونوں ملکوں کو ایک دوسرے سے قریب تر کرتے جا رہے ہیں تو دوسری طرف ہندوستان سے ملٹی ممالک کی طرف روزگار کے لیے جانے والے افراد کی تعداد روز بروز بڑھتی جا رہی ہے۔ ایسی صورت میں عربی زبان کی تدریس کی اہمیت روز روشن کی طرح عیاں ہے۔ روزگار کے لیے طلبی ممالک کا سفر نہ صرف ملک کے باشندگان کی معاشی حالت کو بہتر بناتا ہے بلکہ اس سے خود ملک کی معیشت بھی ترقی پذیر ہوتی ہے جو ملک کی ترقی اور خوشحالی کا ضامن ہے۔ دوسرے لفظوں میں یہ کہا جائے کہ عربی زبان کی





تعلیم سے سیدھے ملک کی ترقی و خوش حالی وابستہ ہے۔
عربی زبان کی اسی خصوصیت اور اس کی تدریس کی ضرورت کو مد نظر رکھتے ہوئے حکومت بہار نے اس کو
اسپے اسکولوں میں ابتدائی درجہ چار سے متعارف کرانے کا مستحسن فیصلہ لیا ہے کیوں کہ اعلیٰ درجات میں اس کی
تعلیم کا نظم کالجوں اور یونیورسٹیوں میں پہلے سے موجود ہے۔ بہار میں ابتدائی درجہ سے اس کی شمولیت کا سب
سے بڑا فائدہ یہ ہوگا کہ بچہ اعلیٰ درجہ تک پہنچتے پہنچتے اس زبان سے اس قدر آشنا ہو چکا ہوگا اور اس کی تفہیم کی
اس قدر استعداد پیدا ہو چکی ہوگی کہ وہ از خود مسائل حل کرنے کی پوزیشن میں ہوں گے اور عربی میں لکھنے اور
بولنے کا بھی کچھ حد تک ملکہ حاصل ہو چکا ہوگا۔

ہندوستان ایک کثیر لسانی ملک ہے جس میں اردو کو گنگا۔جننی تہذیب کی علامت کہا جاتا ہے اور اردو
زبان خود عربی، فارسی اور ہندوستان کی دوسری زبان کے حسین امتزاج کا نمونہ ہے۔ شروع سے عربی کی تدریس
سے اردو کی لسانی خصوصیات جہاں نمایاں ہو کر سامنے آئیں گی وہیں بچے اردو زبان کی صحیح تفہیم اور اس کی
درست خوانی پر عبور حاصل کرنے میں کامیاب ہوں گے۔ اس طرح عربی کی تعلیم و تدریس سے ہندوستان کی
ایک بڑی زبان اردو کی تفہیم بھی تحقق ہوگی۔

لہذا عربی کی تدریس درجہ چار سے شروع کرنے کا فیصلہ حکومت بہار کا ایک تاریخی قدم ہے جس سے
عربی کی ترویج و اشاعت کو نہ صرف پرواز ملیں گے بلکہ ملک میں تہذیبی رشتوں کو بھی استحکام نصیب ہوگا۔

Syllabus of Arabic for Classes XI & XII

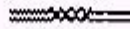
نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (عربی)

درجہ یازدہم و دوازدہم کے عربی نصاب کا تعارف

درجہ چہارم تا درجہ دہم عربی کو ایک مضمون کی حیثیت سے پڑھنے والے طلبہ سے اس مرحلہ میں یہ امید کی جاتی ہے کہ عربی زبان و ادب سے ان کی رغبت و دلچسپی مزید بڑھ چکی ہوگی اور اب ان کو اس زبان سے ایسی انسیت ہو گئی ہوگی کہ اس کے بغیر ایک طرح کی کمی کا احساس ہو رہا ہوگا۔

مختلف درجات کے نصاب کو مد نظر رکھتے ہوئے درجہ یازدہم و دوازدہم کے لیے کچھ اس طرح کا نصاب ترتیب دینے کی کوشش کی گئی ہے جو طالب علم درجہ دہم تک عربی زبان کو ایک مضمون کی حیثیت سے پڑھ چکا ہو وہ اس نصاب سے عربی زبان و ادب سے کافی مانوس ہو جائے گا اور اس کے ذریعہ کچھ ایسی اہم شخصیات جن کی شہرت عربی زبان و ادب میں نہ صرف صوبہ بہار بلکہ ملک و بیرون ملک میں بھی رہی ہے ان سے واقف ہوگا اور ان کے احوال و خدمات سے ان طلبہ میں عربی پڑھنے کی رغبت پیدا ہوگی اور انھیں کے نقش قدم پر چلتے ہوئے اپنی شخصیت کو نمایاں کرنے کی جدوجہد کر سکے گا۔ تاکہ موجودہ دور میں جو طلبہ اس مضمون سے متنفر رہتے ہیں ان کے ذہنوں میں اس کی اہمیت و افادیت جاگزیں ہو جائے۔ اس درجہ کے نصاب میں پچھلے تمام درجات کے قواعد کی ترتیب پر نظر رکھتے ہوئے کچھ خاص و اہم قواعد کو ان درجات میں شامل کرنے کی سعی کی گئی ہے۔ یعنی تشبیہ، استعارہ، کنایہ، حقیقت و مجاز، فصاحت و بلاغت اور عربی زبان سے اردو میں اور اردو زبان سے عربی میں ترجمہ کرنے پر زور دیا گیا ہے۔ مکالمے، محادثے، قصے، کہانیاں اور مضامین و نظموں کے ساتھ اہم شخصیات، نیز درجہ دوازدہم کے لیے قواعد میں ایجاز و اطناب، مساوات، صنائع و بدائع اور تراجم کے ساتھ کچھ خاص اشخاص کو بھی ملحوظ رکھا گیا ہے۔

مذکورہ باتوں کے مد نظر ان درجات کے طلبہ کی صحیح رہنمائی ان کے اساتذہ کی نگرانی میں ہو تو عربی زبان و ادب کو اپنی زندگی کا جزو لا ینفک بنا کر اپنا مستقبل سنوارنے کی کوشش کر سکتے ہیں۔ اور اس طرح عربی زبان و ادب کو کافی فروغ نصیب ہوگا۔





درجہ یازدہم (عربی) کا نصابی خاکہ

الحديقة العربية الجزء الاول — Al Hadiqat-al Arabia-Part I

حصہ نثر

اسلامیات	=	اسلام اور اس سے قبل عورتوں کی حالت پر ایک مضمون
تصوف و اخلاق	=	تصوف و اخلاق کے موضوع پر ساتویں صدی ہجری کی دو نمائندہ تحریریں
افسانہ/قصہ	=	جدید دور میں صنف افسانہ سے ایک نمائندہ افسانہ
تاریخی حکایت	=	عباسی دور سے ایک سبق آموز حکایت
خطابت	=	جاہلی دور میں فن خطابت سے ایک نمونہ
تمثیلی حکایت	=	عہد عباسی کی ایک نمائندہ حکایت
سوانح	=	دور جدید کے دو نمونے — ایک ہندوستان سے
مکالمہ	=	دور جدید سے تین مکالمے

حصہ نظم

حمد و نعت	=	جاہلی دور کے نمائندہ شاعر کا ایک مدحیہ قصیدہ
اخلاقیات	=	اخلاقی موضوع پر ایک اموی دور سے ایک قصیدہ
مدح	=	اموی دور کے نمائندہ شاعر کا ایک قصیدہ
زہد و تصوف	=	دو نمونے، ایک دور جدید سے
تلمذ	=	جدید دور کی ایک نمائندہ نظم
فخر و تمنا	=	دور جاہلی کے مشہور معلقات سے ایک قصیدہ
غزل	=	دو غزلیں، ایک ہندوستان سے

درجہ دوازدهم (عربی) کا نصابی خاکہ

الحديقة العربية الجزء الثاني — Al Hadiqat-al Arabia-Part II

حصہ نثر

وصایا	=	دور جاہلی سے ماخوذ ایک نمونہ
ادب اسلامی	=	قرآن و حدیث کے منتخب نمونے
معاشرت	=	اسلام اور حقوق نسواں کے موضوع پر ایک تحریر
خطبہ	=	دور اموی سے ایک نمونہ
خطوط	=	عہد اموی سے خطوط نگاری کا ایک نمونہ
انشاء پر رازی	=	ایک نمونہ ہندوستان سے
تاریخ نگاری	=	ایک نمونہ
تنقید نگاری	=	تنقیدی ادب سے ایک اقتباس
سفر نامہ	=	ہندوستان سے ایک نمونہ
ناول	=	ایک اقتباس
مکالمہ	=	ایک نمونہ

حصہ نظم

حمد	=	ایک قصیدہ
غزل	=	دو نمونے، ایک ہندوستان سے
نظم	=	دو نمونے، ایک ہندوستان سے
معلقہ	=	ایک نمونہ
مرثیہ	=	ایک نمونہ
وطنی شاعری	=	ایک نمونہ
ہجری شاعری	=	ایک نمونہ
ہجو	=	دور اموی سے ایک نمونہ





درجہ یازدہم (عربی) کا نصابی خاکہ

قواعد عربی — Arabic Grammar

for class XI & XII

حصہ نحر

مشقی سوالات	=	حال کا بیان
مشقی سوالات	=	تمیز کا بیان
مشقی سوالات	=	مستثنیٰ کا بیان
صفت، عطف، تاکید - بدل، عطف بیان	=	توابع
مشقی سوالات	=	اسماء الاعمال کا بیان
		ظروف مبینہ کا بیان
		اسم فاعل
		اسم مفعول
		صفت مشبہ
		فعل لازم و متعدی

حصہ صرف

ابواب مجرد کی شناخت
 ابواب ثلاثی مجرد
 خواص ابواب ثلاثی مزید فیہ
 ابواب رباعی
 جمع کے اوزان
 نسبت کا بیان
 تہخیر کا بیان

علم بیان و معانی

فصاحت و بلاغت کا بیان	=	تعریف و وضاحت
تشبیہ	=	تعریف، ارکان، وضاحت اور مشقی سوالات
استعارہ	=	تعریف، اقسام، وضاحت اور مشقی سوالات
حقیقت و مجاز	=	تعریف، وضاحت اور مشقی سوالات
خبر لانے کا قاعدہ	=	وضاحت اور مشقی سوالات
ایجاز، اختاب، مساوات	=	تعریف، وضاحت اور مشقی سوالات
الہام	=	تعریف، وضاحت اور مشقی سوالات



Marks Division (Persian & Arabic) for Class XI & XII

۱- درسی کتاب

05	(الف) معروضی سوالات	حصہ نثر
05	(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 = 06	(ج) ایک تنقیدی سوال (100 الفاظ میں)	
05	(الف) معروضی سوالات	حصہ نظم
04	(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 = 06	(ج) ایک تنقیدی سوال (100 الفاظ میں)	

۲- فارسی زبان و ادب کی تاریخ

عربی زبان و ادب کی تاریخ

05	(الف) معروضی سوالات	
04	(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 = 06	(ج) ایک تنقیدی سوال	

15

۳- قواعد

۴- ترجمہ

10	(الف) اردو سے فارسی / فارسی سے اردو	
20 = 10	(ب) فارسی سے اردو / عربی سے اردو (نصابی متن سے)۔	
10 = 10	۵- غیر نصابی متن (unseen)	
10 = 10	معروضی سوالات 5 x 2	
100	۶- مضمون نویسی (100 الفاظ میں)	





ہدایات

- ۱- ہر مختصر یا تفصیلی سوال کے کم از کم چار متبادل پوچھے جائیں گے۔
- ۲- غیر نصابی متن (unseen) میں نثر اور نظم دونوں سے ایک ایک نمونہ دیا جائے گا۔ طالب علم کسی ایک متن کے معروضی جوابات دیں گے۔
- ۳- مضمون نویسی کے حصے میں کم از کم پانچ موضوعات دیئے جائیں گے جن میں سے کسی ایک موضوع پر طالب علم جواب دے گا۔
- ۴- XI ویں درجے میں ۲۰ فی صد نمبرز زبانی امتحان کے لیے مخصوص ہوں گے۔

Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

مقاصد اور اہمیت

ہندوستان کو فارسی کا وطن جانی کہا جائے تو بے جا نہ ہوگا۔ اس ملک میں اس زبان و ادب کی تاریخ قدیم بھی ہے اور قومی بھی۔ یہ زبان ایک طویل مدت تک ہندوستانی جنت نشان کی سرکاری زبان رہ چکی ہے اور یہ انداز خاص سنسکرت اور اوستا کے خواہرانہ رشتہ کی یاد دلاتی رہی ہے۔ پھر زمانہ بدلا اور فارسی کی تداولی حیثیت میں فرق آیا لیکن یہ حقیقت ہے کہ وہ اردو کے رشتے سے آج بھی اپنے اثرات اور اپنی اہمیت و ضرورت کا ہمیں یہ ہمہ وجہ احساس دلا رہی ہے۔ خصوصاً ہندوستان کی ان ریاستوں کے لیے جہاں آج اردو کو دوسری سرکاری زبان کا درجہ حاصل ہے، فارسی کی عصری و تعلیمی اہمیت محتاج بیان نہیں کیوں کہ یہ اردو کی معنویت کو دوبالا کرنے کا ایک بہترین ذریعہ ہے۔ اگر ہم (بہ شکل اردو) کسی ریاست کی ثانوی ریاستی زبان کو مضبوط و مستحکم بنانا اور اسے مفید و کارآمد بنائے رکھنا چاہتے ہیں تو ہمیں فارسی کی تعلیم کے انتظام و انصرام پر توجہ بغیر کوئی چارہ کار نہیں۔

صرف اردو ہی کیا، حقیقت تو یہ ہے کہ جس طرح ہندوستان کی کشمیر جیسی ریاست کی زبان، ایرانی پراکرت سے اپنا رشتہ رکھتی ہے اور جس طرح اس ملک کی دیگر بڑی بڑی علاقائی اور ریاستی زبان پر فارسی کے نقوش و اثرات مرتب ہوئے ہیں اور آج بھی وہ بشرط التفات تمام ترمیماتوں کے ساتھ جس طرح ہمارے سامنے آتے ہیں انہیں دیکھتے ہوئے کہا جاسکتا ہے کہ آریائی لسانیاتی رشتہ سے فارسی کی تعلیم پر توجہ، گویا ہندوستان کی مختلف علاقائی اور ریاستی زبانوں کے لسانیاتی و لفظیاتی استحکام پر توجہ کے مترادف ہے۔ اردو اور ہندی اگر سگی بہنیں ہیں اور اردو کے لیے فارسی کی اہمیت و ضرورت طے شدہ ہے تو پھر یہ کہنا کیوں کر مبالغہ ہو سکتا ہے کہ فارسی کی تعلیم سے ہندی شہدکوش کو فائدہ پہنچنا خارج از امکان نہیں ہے۔ لسانیات کی تاریخ گواہ ہے کہ فارسی نے ہندوستان کو بہت ساری نھلائی ہوئی آریائی آوازیں یاد دلائی ہیں اور انہیں ہمیشہ کے لیے ذہنوں میں محفوظ کر دیا ہے۔ مزید یہ کہ نسل در نسل ملک کی بہت بڑی آبادی کو باس لحاظ اس قوت میں اضافہ سے نوازا ہے جسے طلاقبہ لسانی کہتے ہیں، بول چال میں تلفظ کی درستگی، حسن ادا اور لب و لہجہ میں کرخنگی کے بجائے نرمی و شیرینی اور صفائی و نفاست کے لیے فارسی کی اہمیت اور اس کا اثر واضح۔ یہ شیریں زبان ہے تو بے شک یہ دلوں کو جیت لیٹا بھی جاتی ہے۔

فارسی کا ہندوستان سے رشتہ نہ تو معمولی ہے اور نہ ہی کسی اعتبار سے کم اثر اور کم فائدہ بخش۔ بات







Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

ہندوستان میں تعلیم یا ذریعہ تعلیم بننے والی زبان کی ہو یا اخلاقیات و عرفانیات کے توسط سے قومی یکجہتی کے مضبوط و سدا بہار عناصر کو فروغ دینے کی، بہر حال فارسی کی تاریخی و تہذیبی اثرات مسلم ہیں۔ ہندوستان، ایران کے بعد فارسی کا دوسرا بڑا گہوارہ رہا ہے۔ یہاں تک کہ اگر فارسی کی تاریخ سے دور ہندوی کے اکتسابات بنا دیئے جائیں تو فارسی کا ادبی و علمی رنگ روپ کا پھیکا پڑ جانا لازمی ہے۔ ہندوستان کے لیے بھی فارسی کی گونا گوں اہمیت ہر دور میں رہی ہے۔ ایک زمانہ تھا کہ دکن کے مقابلے میں شمالی ہند کے تہذیبی اختراعات اسی زبان و ادب کی بدولت نمایاں رہے اور آج بھی کسی نہ کسی طرح تاریخی تدابیر کے یہ اثرات غیر محسوساتی نہیں۔ فارسی کے صرف ایک کلاسیکل زبان یا تاریخی تبرک ہونے کا تصور غلط بھی ہے، خطرناک اور نقصان دہ بھی کیوں کہ ہندوستان میں چاہے اس کے ماضی کی طرح آج اس کا حال شاندار نہ ہو، لیکن مشرق وسطیٰ میں عربی کے بعد سب سے زیادہ اہمیت رکھنے والی زبان ہے۔

لہذا ثقافتی و سیاسی روابط اور ملک و بیرون ملک کے مخطوطات اور تہذیبی آثار و کتب سے استفادہ کے لیے اس زبان کی عصری ضرورت و اہمیت سے انکار کا سوال ہی نہیں پیشتر ملکوں سے صحافتی و سفارتی اور ثقافتی تعلقات کی بحالی و تازہ کاری میں اس زبان سے کافی مدد کا حصول ممکن ہے۔

اندرون ملک معاملات پر نظر ڈالیں تو فارسی کی اہمیت یہ ہے کہ آرکائیوز، دستاویز، عدالتی کاغذات، اہم فرامین اور مختلف نوعیت کے ریکارڈ کو پڑھنے اور سمجھنے اور مختلف نوعیت کی علمی و ادبی تحقیقات کا سلسلہ جاری رکھنے کے لیے فارسی کی ضرورت و اہمیت روشن ہے۔ اس زبان کی مدد سے نہ صرف یہ کہ فرانسیسی جیسی بعض اہم مغربی زبان سے، بشرط خواہش ہم قریب ہو سکتے ہیں بلکہ مشرق وسطیٰ کے بیشتر ممالک میں پہنچ سکتے اور روزگار کے مواقع کی فراہمی کو آسان بنا سکتے ہیں۔ ریلوے، ٹیلی ویژن وغیرہ کے بیرونی پروگراموں کے لیے بعض غیر ملکی جمہوریتوں روابط و خطوط کے لیے اس زبان سے آشنائی عصری ضرورت و اہمیت کی حامل ہے۔ بہت سارے ایسے ثقافتی فنون اور ہندوستان کے مسلم ہی نہیں غیر مسلم فنکاروں کی مختلف علوم و فنون میں ایسی بہت ساری یادگاریں موجود ہیں، جن کی مغربی ممالک میں بڑی قدر ہے اور ان کی تفہیم، فارسی کے بغیر ممکن نہیں۔ آج کی دنیا امن و سکون کی تلاش میں ہے۔ یہ موجودہ تہذیب کی عالمگیر ضرورت بھی ہے۔ فارسی کا اخلاقیاتی ذخیرہ ادب اس لحاظ سے موجودہ دور میں بڑی اہمیت رکھتا ہے۔ ایک تعلیمی مضمون کی حیثیت سے فارسی نہ صرف مرکزی بلکہ صوبائی سطح کے مقابلہ جاتی امتحانات میں شرکت کرنے والے طلبہ کے لیے بھی، ان کی کامیابیوں کو روشن بناتی رہی ہے۔ غرض کہ متعدد عصری فوائد اور عصری ضرورتیں فارسی کی ارزش اور قدر و قیمت کا احساس دلاتی ہیں۔ ان ہی معنویتوں کے پیش نظر فارسی نصاب کا یہ خاکہ ماہرین کے خلاصانہ تعاون سے مرتب کیا گیا ہے۔

Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

درجہ یازدہم و دوازدہم کا نصاب

وضاحت

فارسی زبان و ادب کی اہمیت اور ہندستان کی تاریخ و تہذیب سے ان کا گہرا رشتہ محتاج بیان نہیں۔ چٹک ہمارے ملک میں فارسی ادب کی تاریخ قدیم ہی نہیں غنی بھی ہے۔ اور مختلف جہتوں سے اس کی عصری و معاشرتی افادیت علیٰ حالہ برقرار ہے۔ چنانچہ ان ہی افادی پہلوؤں کو مد نظر رکھتے ہوئے درجہ چہارم سے یازدہم تک فارسی طلباء کے لیے یہ نصابی خاکہ مرتب کیا گیا ہے۔ آخری کڑی، درجہ یازدہم اور دوازدہم کے اس نصابی خاکے کو ہر لحاظ سے جامع بنانے کی سعی کی گئی ہے۔ اس نصابی سلسلہ کے تحت جماعت دہم تک طلباء کے مبلغ علم میں اضافہ کی جو متوقع صورتیں بروئے عمل آجکیں، انھیں مد نظر رکھتے ہوئے گیارہویں اور بارہویں جماعت کے لیے یہ نصاب اس انداز سے مدون کیا گیا ہے کہ وہ آئندہ کے لیے اپنے بڑے اور بنیادی اہداف سے محروم نہ رہیں اور ترتیب نصاب کی ارتقائی کیفیت پوری طرح ابھر کر سامنے آجائے۔ طلباء میں خود اعتمادی پیدا ہو، ان کی معلومات میں اضافہ کا احساس نمایاں ہو اور انھیں اس طرح ادبی مسرت اور بصیرت میسر آئے کہ وہ اپنے آئندہ تعلیمی ادوار میں اس مضمون کے انتخاب کی اہمیت سمجھیں، اس سے دلچسپی لیں اور فارسی پڑھنے کے رجحان اور حوصلہ کو غنی بیڑی میں زیادہ سے زیادہ تقویت ملتی رہے۔

ان مقاصد کے تحت نصاب کے مشمولات اس طرح یکجا و مرتب کیے گئے ہیں کہ ان سے فارسی زبان و ادب کی تاریخ، اس کے مختلف ادوار اس کے مختلف رجحانات سبک ہمارے طلباء کے سامنے آجائیں۔ قدیم و جدید اصناف نثر کے بہترین نمونوں سے ان کی واقفیت ہو اور شاعری کی ہئیکٹی و موضوعی اور جدید تہذیبی اصناف کی مناسب معلومات انھیں میسر آجائیں۔ ان کے ادبی و علمی اور فکری ذوق کو جلا میسر ہو، سماجیات، عصریات، ماحولیات و اخلاقیات نیز ہمہ گیر انسانی اقدار کی تفہیم اور فروغ میں ان کا کردار معاون بن سکے، عملی زندگی کی کارآمد معلومات، عصریات کے تازہ ترقیاتی موضوعات، شعر فنی، صلاحیت تشریح و تجزیہ کی قوت اور تنقیدی استعداد، نیز ترجمہ نگاری کی صلاحیتیں پروان چڑھ سکیں۔ ان میں مافی الضمیر کے اظہار کی متوازن صلاحیت پیدا ہو سکے۔ اور وہ تحریر و تقریر کے میدان میں ادب کے افادی پہلو سے کام لے کر ملک و قوم کی بہترین خدمات انجام دے سکیں۔

ہمارے اساتذہ کی یقیناً یہ اہم ذمہ داری ہے اور ہمیں اُمید تو یہ بھی کہ وہ اپنے بہترین تدریسی تجربات



Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

سے کام لیتے ہوئے مذکورہ تدریسی مقاصد کو کامیاب بنانے میں حقیقی معاون ثابت ہوں گے اور کسی بھی موقع پر فارسی طلبہ و طالبات کو نہ تو احساس کمتری کا شکار ہونے دیں گے اور نہ ہی انہیں اس شیریں زبان اور اس کے اعلیٰ ادب سے بددل ہونے کا کوئی موقع آنے دیں گے۔ زبان کا احترام دراصل انسانوں کا احترام ہے اور کسی زبان کی کسی بھی نچ سے توہین درحقیقت تہذیبوں اور تمام بنی نوع انسان کی توہین ہے۔ اور بے شک زبان و ادب کا مستقبل طلباء کے ذریعہ بنتا ہے مگر اساتذہ کی محنت و مشقت کے بغیر یہ ناممکن ہے۔



Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

کتاب کا خاکہ

I درسی کتاب : درجہ (XI)

XI & XII

II فارسی قواعد

III فارسی زبان و ادب کی تاریخ

شاعری

۱	- حمد
۲ (۲+۲+۲)	- غزلیں
۱	- مرثیہ
۱	- مثنوی
۲ (۱+۱)	- نظمیں
۸ (۳+۳)	- رباعیاں

نثر

۲ (۲+۲+۲)	- حکایتیں
۳	- مکتوبات
۱	- افسانہ
۱	- سفرنامہ
۱	- تذکرہ
۱	- ڈراما
۳	- مقالات

(الف) فارسی زبان و ادب : عہد اکبری کے بعد

(ب) فارسی زبان و ادب : سلجوقی اور تاجاری دور

(ج) جدید فارسی شاعری

==X==



Syllabus of Persian For Class : XI & XII

نصاب برائے درجہ یازدہم و دوازدہم (فارسی)

کتاب کا خاکہ

درجہ (XII)

شاعری

۱	-	نعت
۲ (۲+۲+۲)	-	غزلیں
۱	-	مثنوی
۲ (۱+۱)	-	نظمیں
۱	-	نقصین
۸ (۳+۳)	-	رباعیاں

نثر

۲ (۱+۱)	-	علمی مضامین
۱	-	تذکرہ
۱	-	افسانہ
۱	-	تقریظ
۱	-	تقدیر
۱	-	مصاحبہ
۱	-	طریقات و مضحکات
۳	-	مقالات

- (الف) فارسی زبان و ادب : عہد مغلیہ کے بعد
(ب) فارسی زبان و ادب : صفوی اور قاجاری دور
(ج) جدید فارسی نثر



Syllabus of Persian For Class : XI & XII

Marks Division (Persian & Arabic) for Class XI & XII

		<u>۱- درسی کتاب</u>	
05		(الف) معروضی سوالات	حصہ نثر
05		(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 =	06	(ج) ایک تنقیدی سوال (100 الفاظ میں)	
05		(الف) معروضی سوالات	حصہ نظم
04		(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 =	06	(ج) ایک تنقیدی سوال (100 الفاظ میں)	
		<u>۲- فارسی زبان و ادب کی تاریخ</u>	
		<u>عربی زبان و ادب کی تاریخ</u>	
05		(الف) معروضی سوالات	
04		(ب) ایک مختصر جواب (50 الفاظ میں)	
15 =	06	(ج) ایک تنقیدی سوال	
15			
		<u>۳- قواعد</u>	
		<u>۴- ترجمہ</u>	
10		(الف) اردو سے فارسی / فارسی سے اردو	
20 =	10	(ب) فارسی سے اردو / عربی سے اردو (نصابی متن سے)	
		<u>۵- غیر نصابی متن (unseen)</u>	
10 =	10	معروضی سوالات 5 x 2	
10 =	10	۶- مضمون نویسی (100 الفاظ میں)	
100			



Syllabus of Persian For Class : XI & XII



ہدایات

- ۱- ہر مختصر یا تفصیلی سوال کے کم از کم چار متبادل پوچھے جائیں گے۔
- ۲- غیر نصائی متن (unseen) میں نثر اور نظم دونوں سے ایک ایک نمونہ دیا جائے گا۔ طالب علم کسی ایک متن کے معروضی جوابات دیں گے۔
- ۳- مضمون نویسی کے حصے میں کم از کم پانچ موضوعات دیے جائیں گے جن میں سے کسی ایک موضوع پر طالب علم جواب دے گا۔
- ۴- XI دیں درجہ میں ۲۰ فی صد نمبر زبانی امتحان کے لیے مخصوص ہوں گے۔

پارسی

Syllabus of Pali : XI-XII

पाली भाषा एवं साहित्य

पाली भाषा एवं साहित्य में एक-एक सौ अंक के दो पत्र होंगे।

प्रथम पत्र- गद्यएवंव्याकरण-

70 + 30 = 100

द्वितीय पत्र- पद्यएवंरचना-

65 + 35 = 100

कुल = 200

पालि प्रथम-पत्र के लिए निर्धारित पुस्तक एवं पाठ-

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 100

पुस्तक-

(क) पाली पाठ संग्रहो,

संपादक- डा० जगदानन्द ब्रह्मचारी

प्रकाशक- डॉ० पी० सी० राय, पचहट्टी, बोधगया।

(ख) पाली पाठावलि,

संपादक- शिव कुमार आत्रेय एवं रामेश्वर मिश्र

प्रकाशक- प्रा० शिव कुमार सिंह, गढ़पुर, बिहारशरीफ।

निर्धारित पाठ-

(क) पालि पाठसंग्रहो :

- | | | | |
|--------------------|-----------------------------|---------------------------|-----------------|
| 1. कुरंगभिगजातकं | 2. रजोवादजातकं | 3. चत्तारिपुव्वनिमित्तानि | 4. महाभिनिकामनं |
| 5. धम्मचक्कप्पवतनं | 6. राहुलकुमारस्स दायज्जदानं | 7. सिगालसुत्तं | |

(ख) पालि पाठावलि :

- | | | |
|----------------------|-----------------------------|-------------------|
| 8. जीवको कोमारभच्चो | 9. देवदत्तस्य बुद्धोपरिदेसी | 10. अम्बपालिगणिका |
| 11. विसासा मिगसरमाता | 12. सदिट्ठिकं सामञ्जकलं | |

टिप्पणी-

(क) सद्धा, पन्ना, सति, अरहत, सेख-असंख, समाधि, नामरुण, निब्बान, नीरण।

(ख) बोधगया, इसिपतन मिगदाय, लुम्बिनी, सावथी, राजगृह, पाटलिपुत्र, वैशाली, कुसीनारा।

(ग) जातक, धम्मपद, उदान, अपदान।

(घ) बोधिसत्त, सारिपुत्त, मोगल्लान, महाकस्सप, आनंद, सुजाता, अम्बपालि, विसाखामिगारमाता।

वर्गों टिप्पणी के लिए प्रश्न-चयन के क्रम में उपयुक्त (क), (ख), (ग) तथा (घ) में से प्रत्येक वर्ग से एक-एक शब्द का प्रश्न चयन अनिवार्य है।

व्याकरण के निर्धारित पाठ-

1. शब्द रूप- पुल्लिङ्ग : अकारांत, इकारांत, उकारांत

स्त्रीलिङ्ग- आकारांत एवं ईकारांत

सर्वनाम- अम्ह, तुम्ह एवं त तीनों लिङ्गों में

2. धातुरूप- पठ, चुर, कर, सु, एवं लिख धातुओं के रूप पच्चुप्पन्न, अतीत एवं अनागत कालों में।

3. संधि 4. विभक्ति 5. समास 6. उपसर्ग

अभिस्तावित पुस्तक-

पालिचुदोदय, सं०- डॉ० ज० ब्रह्मचारी

प्रकाशक- डॉ० पी० सी० राय, पचहट्टी, बोधगया।

पालि द्वितीय पत्र के लिए निर्धारित पुस्तक एवं पाठ-

पुस्तक- पालिपाठसंग्रहो, सं०- डॉ० जगदानन्द ब्रह्मचारी

निर्धारित पाठ-

- | | | | |
|----------------|--------------------------|----------------------|-------------|
| 1. धनियसुत्तं | 2. पराभवसुत्तं | 3. वसल संत्तं | 4. बालवग्गो |
| 5. पण्डितवग्गो | 6. सुखवग्गो | 7. पव्वज्जासुत्तं | 8. नीतिगाथा |
| 9. धम्मोवाद | 10. ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं | 11. धातुविभाजनीय कथा | |

रचना—

हिन्दीसेपालिमेंअनुवाद,तत्समशब्दोंकापालिकरणएवंपालिवाक्योंकाशुद्धिकरण।

प्रश्न विधान—

गद्यप्रथमकीदोनोंपुस्तकोंकेनिर्धारितपाठोंसेदोआलोचनात्मकप्रश्नपूछेजायेंगे,दोउद्धृतांशोंकी

सप्रसंग व्याख्या तथा हिन्दी में अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे।

प्रत्येक प्रश्न में अथवा अवश्य रहे।

व्याकरण—

व्याकरणकेतीनप्रश्नोंकेउत्तरदेनेहोंगे।प्रत्येकप्रश्नकेलिएविकल्परहेगा।द्वितीयपत्रपद्यकेदो

आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे। दो अद्धृतांश व्याख्या तथा दो उद्धृतांश हिन्दी में अनुवाद के लिए पूछे जायेंगे।

प्रत्येक प्रश्न के लिए विकल्प रहेगा।

रचना—

हिन्दीसेपालिमेंअनुवादकेलिएकमसेकमदोपरिच्छेददियेजायेंगे,जिनमेंसेएककाअनुवादकरनाहोगा।

पालिकरण के लिए कम से कम आठ तत्सम शब्द दिये जायेंगे, जिनमें से पाँच पालि रूप देने होंगे।

शुद्धिकरण के लिए कम से कम आठ पालि वाक्य दिये जायेंगे, जिनमें से पाँच को शुद्ध कर पालि में लिखना होगा।

अनुशासित व्याख्यान-विधान—

प्रत्येक सत्र में 100 (एक सौ) व्याख्यान

गद्य पुस्तक : पालि पाठ संग्रह	विषय या पाठ	व्याख्यान संख्या
	भूमिका	4
	कुरंगभिगजातकं	3
	राजोवादजातकं	3
	चत्तारिपुव्वनिमित्तानि	2
	महाभिनिकखमनं	4
गद्य पुस्तक : पालिपाठावलि	जीवको कोमारमच्चो	6
	देवदत्तस्स बुद्धोपरिद्वेसो	5
	संदिट्ठिकं सामज्जफलं	15
पद्य पुस्तक : पालिपाठ संग्रह	धनियसुत्तं	4
	पराभवसुत्तं	2
	बसलसुत्तं	3
	बालवग्गो	3
	पव्वज्जासुत्तं	2
	नितिगाथा	2
	धम्मोवाद्	2
व्याकरण	विषय या पाठ	व्याख्यान
	पुलिंगं	2
	स्त्रीलिंगं	1
	सर्वनाम	2
	धातुरूप	3
	विभक्ति	6
पालिकरण		3
शुद्धिकरण		5
हिन्दी से पालि में अनुवाद		18

कुल = 100

द्वितीय सत्र

गद्य पुस्तक : पालिपाठसंग्रह	धम्मचक्कपवत्तनं	7
	राहुलकुमारस्सदायज्जदानं	3
	सिंंगालसुत्तं	7
पालिपाठावलि	अम्बपालिगणिका	4

	विसाखामिगारमाता	8
पद्य पुस्तक : पालिपाठ संग्रहो	पण्डितबग्गो	3
	सुखग्गो	2
	ब्राह्मणधम्मिकसुत्तं	3
	धातुविभाजनीयकथा	3
व्याकरण	संधि	5
	समास	5
	उपसर्ग	5
रचना	पालि में अनुवाद	20
	दोनों ही पत्रों की पुनरावृत्ति	25

ॐ

पालि



Syllabus of Prakrit : XI-XII

प्राकृत भाषा एवं साहित्य

(प्रथम-पत्र)

प्राकृत प्रथम पत्र पद्य के लिए निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ-

प्राकृत पद्य एवं अनुवाद

समय : 3घंटे

(क) प्राकृत पद्य

स्वीकृत पाठ्य पुस्तकें-

1. अगउदत्त- मयणमुजरी कहा- (प्रथम 200 गाथाएँ)

सम्पादक- डॉ० चन्द्रदेव राय एवं डॉ० रामजी राय

2. पाठ्य सुहासिय संग्रहो (प्राकृत सुभाषित संग्रह)

सम्पादक- डॉ० चन्द्रदेव राय एवं डॉ० रामजी राय

स्वीकृत पाठ पठनीय-

1. कव्वं

2. सच्चं

3. अहिंसा

4. सीलं

5. उवदेस

6. सज्जण बज्जा

7. सुभासिथ

8. दुज्जन बज्जा

9. संसारो

10. धम्मो

11. गुणमहिमा

(ख) अनुवाद- प्राकृत से हिन्दी एवं हिन्दी से प्राकृत

प्राकृत व्याकरण एवं रचना- डॉ० चन्द्रदेव राय एवं डॉ० रामजी राय

प्राकृत गद्य एवं प्राकृत व्याकरण

(द्वितीय-पत्र)

समय : 3घंटे

स्वीकृत पाठ्य पुस्तक का नाम-

(क) पाइप गजज पवेस (प्राकृत गद्य प्रवेश)

सम्पादक-डॉ०चन्द्रदेवरायएवंडॉ०रामजीराय

इस पुस्तक के निम्नलिखित पाठ पठनीय हैं-

1. राम रावण जुज्झं (राम रावण युद्ध)

2. जहाउ चरिम (जटायु चरितम्)

3. बुद्धिमंतो सियालो (बुद्धिमान शृंगाल)

4. पावकमस्स फलं (पाप कर्म का फल)

5. निद्धनो वणिओ (निर्धन वणिक्)

6. अमंगतिय-पुरिसस्स कहा (अमांगलिक पुरुष की कथा)

7. दयाधम्मो (दया-धर्म)

8. भारिया-सील परिक्षा (भार्या के शील की परीक्षा)

9. भयवंबाहुबली(भगवान× बाहुबली)

10. पाउस कालो (वर्षा काल)

11. सिप्पि पुत्तस्य कहा (शिल्पी पुत्र की कथा)

12. मूढा किसयस्स कन्ना (मूर्ख कृषक की कन्या)

13. छत्त परिक्षा (छात्र की परीक्षा)

14. मेहेसूरावी (घर का वीर)।

15. अत्यो अणत्यजुओ (अर्थ अनर्थ से युक्त)

(ख) प्राकृत व्याकरण के निर्धारण अंश

(1) कारकों का सामान्य ज्ञान

पूर्णांक : 100

- 85 अंक

- 65 अंक

- 20 अंक

- 15 अंक

पूर्णांक : 100

- 70 अंक

- 30 अंक

- 10 अंक



- (2) शब्द रूप- देव, राया, सव्व, मुणि, एय, दु, ति, चदु एवं पंच
(3) धातु रूप- भू, पढ, गम, अस्, स्था, हण, एवं पा – 10 अंक
(वर्तमान, भूत, भविष्यत आज्ञार्थक एवं विधि में)

सहायक पुस्तकें-

1. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
तारा प्रकाशन, वाराणसी
 2. प्राकृत व्याकरण एवं रचना – डॉ० चन्द्रदेव राय एवं डॉ० रामजी राय
 3. सरल प्राकृत व्याकरण – डॉ० राजाराम जैन
प्राच्य भारतीय प्रकाशन, आरा
- प्राकृत दीपिका- डॉ० सुदर्शन लाल जैन

ॐ

प्राकृत

